A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 01 मई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 231, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

पाकिस्तान को घेर कर दुनिया में अलग-थलग करना जरूरी

जनरल मनोज नरवणे (रि)

अभी हफ्ताभर पहले ही पहलगाम के पास बैसरन घाटी के मनोरम मैदान में सैलानियों और हनीमून मनाने गए जोड़ों की भीड़ पर आतंकवादी हमले ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। उस हमले ने देश में फिर से देशभक्ति और अंधी राष्ट्रीयता की लहर पैदा कर दी। सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमिटी (सीसीएस) की बैठक के, जिसमें चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की गैरहाजिरी खल रही थी, बाद सरकार ने तुरंत प्रतिक्रिया ज़ाहिर करते हुए जवाब देने के कई कदमों की घोषणा की, जिनमें सिंधु जल संधि को स्थगित करने से लेकर सभी पाकिस्तानी सैन्य सलाहकारों को अवांछित व्यक्ति घोषित करना तक शामिल था। इन सभी कदमों न केवल हालात की गंभीरता को रेखांकित किया बल्कि भावी कार्रवाई के संकेत भी दे दिए। रक्षा मंत्री और प्रधानमंत्री, दोनों ने राष्ट्र के आक्रोश को स्वर देते हुए कड़े बयान दिए और न केवल हमला करने वालों को सज़ा देने बल्कि इसके पीछे छिपे साजिशकर्ताओं को निशाना बनाने के भी संकल्प व्यक्त किए।

इन उपायों का पहले कदम के तौर पर स्वागत किया जा सकता है, लेकिन इन्हें अलग-थलग कदमों के रूप में नहीं देखा जा सकता। हर एक जवाबी कदम का स्पष्ट मकसद और सुपरिभाषित नतीजा होना चाहिए। पहली शर्त यह है कि वह कदम पाकिस्तान को 'सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देने से विश्वसनीय तथा निर्णायक रूप से रोकता हो।' इस तरह के कदम पहले भी उठाए गए हैं, लेकिन इन जवाबी कार्रवाइयों के बावजूद पाकिस्तान हिंसा के आत्मघाती रास्ते पर चलते रहने से बाज नहीं आया। इसलिए, वक्त की मांग यह है कि गहराई में जाकर मूल तथा केंद्रीय मसले को निबटाया जाए ताकि पाकिस्तान का सत्तातंत्र की समझ में आ जाए कि उसके लिए बुद्धिमानी की बात क्या है। यह भी ज़रूरी है कि हमारी सामूहिक जवाबी कार्रवाई ऐसी हो जिससे हमारे समाज का ताना-बाना छिन्न-भिन्न न हो।

आतंकवादी कार्रवाई का मकसद सामान्य नागरिकों को दहशत में डालना और उनकी ज़िंदगी या उनके विचारों को जबरन बदलना होता है। अगर इस ताज़ा आतंकी कार्रवाई के कारण पर्यटन तुरंत बंद हो जाता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ता है, या हमारी राजनीतिक व्यवस्था में दरार पड़ती है तो इसका मतलब होगा कि आतंकवादी और उनके आका अपने मंसूबों में कामयाब हो गए। इसलिए ज़रूरी है कि यह सब न होने दिया जाए। कश्मीर से सैलानियों का पलायन तो समझा जा सकता है, लेकिन देश के विभिन्न भागों में कश्मीरी छात्रों को निशाना बनाना समझ से परे है क्योंकि यह आतंकवादियों के खेल के मोहरे बनना ही है।

जम्मू-कश्मीर में अब तक हमें 'नकारात्मक शांति' ही हासिल हुई है। इसके मायने हैं कि हिंसा की वजहों का निबटारा हुए बिना हिंसा अपेक्षाकृत रूप से नहीं हुई। यह दो युद्धरत देशों के बीच अस्थायी युद्धविराम जैसा नहीं है। आतंकवाद और अलगाववाद विरोधी कार्रवाइयां तीन दशक से चल रही हैं और हर साल सैकड़ों आतंकवादी मारे जाते हैं, लेकिन स्थानीय कैडरों समेत आतंकवादी कैडरों की संख्या लगभग जस की तस रही है। अगर आतंकवादी संगठन युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं और उन्हें 'बंदूक उठाने' को तैयार कर रहे हैं, तो यह चिंता की बात है। इसलिए आत्म-परीक्षण की ज़रूरत है क्योंकि अगर हमें दीर्घकालिक 'सकारात्मक शांति' हासिल करनी है यानी समस्या को जड़ से खत्म करना है तो अंतिम राजनीतिक समाधान ढूंढना होगा।

यही बात सीमा पार के उन उपायों पर भी लागू होती है जिनकी घोषणा की गई है या जिन पर विचार किया जा रहा है। हर एक प्रस्ताव पर उसके तार्किक अंत को लेकर भी गहन विचार किया जाना चाहिए और उसके लिए 'रेड टीम' तैयार की जानी चाहिए। सिंधु जल संधि को स्थगित करना वास्तव में एक बड़ा कदम है, जो हमारे संकल्प को ज़ाहिर करता है।

लेकिन सवाल यह है कि इसे लागू कैसे किया जाएगा? सवाल यह भी है कि पहले से ही सूखे जैसी स्थिति का सामना कर रहे पाकिस्तान की आबादी पर इसका क्या असर पड़ेगा? यह उनकी अर्थव्यवस्था पर निश्चित ही बुरा असर डालेगा, लेकिन यह बोझ उसी आबादी को ढोना पड़ेगा, जो पहले ही घोर कठिनाइयों का सामना कर रही है। पूरी संभावना यह है कि इस तरह की घोषणा से उन्हीं तत्वों को फायदा होगा, जो भारत-विरोधी भावनाओं को भुनाकर ज़िंदा हैं। यह सलाह भी दी जा रही है कि कराची की घेराबंदी करने के लिए भारतीय नौसेना का इस्तेमाल किया जाए। यह कहना तो आसान है मगर करना मुश्किल है। इसलिए, सभी विकल्पों पर सावधानी से विचार करना और कोई कदम उठाने का फैसला करने से पहले चुनौतियों का आकलन करना ज़रूरी है, चाहे मामला नागरिक दायरे का हो या सैन्य दायरे का और संघर्ष के नियमों, अंतिम नतीजों और संघर्ष से बाहर निकलने के विकल्पों पर भी विचार करना चाहिए।

सख्त जवाब देना बहुत ज़रूरी है, लेकिन वह जवाब ऐसा हो जिसके साथ सफलता का आश्वासन जुड़ा हो। वह जवाब कब, कहां और किन साधनों के ज़रिए दिया जाएगा यह सब तय करना हमारा काम है। अहम मुद्दा यह है कि हम उन जगहों पर हमला करें जिनके कारण पाकिस्तान अपना रास्ता बदलने को मजबूर हो जाए। उसके व्यवहार में वांछित बदलाव लाने के लिए उसकी किन दुखती रगों पर चोट की जाए? गद्दी के पीछे किसकी ताकत है? इस तरह के फैसले पाकिस्तानी सत्तातंत्र की अंदरूनी छोटी-सी मंडली करती है, इसलिए हमें उसे ही निशाना बनाने पर ज़ोर देना होगा। एक अच्छी शुरुआत करने के लिए हम उन लोगों और संगठनों के नाम ले सकते हैं, उन पर प्रतिबंध लगा सकते हैं और अपनी अंतर्राष्ट्रीय साख का इस्तेमाल कर सकते हैं। आतंकवाद को शह देने वालों के करीबी लोगों को उन देशों से जबरन निकाला जा सकता है, जहां वह पढ़ाई वगैरह कर रहे हों। हमें वहीं चोट करनी है जहां उसे सबसे ज्यादा दर्द पहुंचे। पाकिस्तान के नेतृत्व के होश तभी ठिकाने लगेंगे जब उसे ऐसे घेर लिया कि वह कहीं भाग न पाए और पूरी दुनिया में अलग-थलग पड़ जाए।

इन लोगों की पहचान करना और उनके खिलाफ कार्रवाई करना असली चुनौती है। हमें सिर कलम करना है, चाहे यह कानूनी जंग से हो या सैन्य उपायों से। इसी के साथ हम सबको एक अवाम के रूप में अपना संतुलन नहीं खोना है, ताकि अनजाने में हम आतंकवाद के इस खेल के मोहरे न बन जाएं। हमें सरकार को भी समय देना होगा ताकि वह उपयुक्त जवाब सोच और दे सके।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

दुनिया जगर-मगर है कि मज़दूर दिवस है
चर्चा इधर-उधर है कि मज़दूर दिवस है

मालिक तो फ़ायदे की क़वायद में लगे हैं
उन पर नहीं असर है कि मज़दूर दिवस है

ऐलान तो हुआ था कि घर इनको मिलेंगे
अब भी अगर-मगर है कि मज़दूर दिवस है

साधन नहीं है कोई भी, भरने हैं कई पेट
इक टोकरी है, सर है कि मज़दूर दिवस है

हाथों में फावड़े हैं 'यती' रोज़ की तरह
उनको कहाँ ख़बर है कि मज़दूर दिवस है।

- ओमप्रकाश यती

सागर जिले में आज आध्यात्मिक संस्कृति का हो रहा है सूर्योदय

इस्कॉन की भूमिका वैश्विक

● सागर में पर्यटन विकास की संभावनाओं को साकार करने के प्रयास ● मुख्यमंत्री ने सागर में इस्कॉन मंदिर की वर्चुअली रखी आधारशिला

भोपाल। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के संदेश और भारतीय संस्कृति को इस्कॉन संस्था ने विश्वभर में फैलाया है। भारतीय संस्कृति के प्रसार में इस्कॉन की भूमिका वैश्विक है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कलेक्ट्रेट, उज्जैन के एनआईसी कक्ष से सागर जिले के ग्राम मेनपानी में इस्कॉन मंदिर के भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड अंचल गोपाल कृष्ण के आदर्शों को मानने वाली भूमि है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लगभग 50 करोड़ रूपये की लागत से सागर जिले के मेनपानी की पहाड़ियों में बनने वाले भव्य इस्कॉन मंदिर की वर्चुअली आधारशिला रखी। उज्जैन एनआईसी कक्ष में विधायक श्री अनिल जैन कालुहेड़ा भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस्कॉन इंटरनेशनल ने भगवान श्रीकृष्ण के विचारों एवं आदर्शों को देश में और विदेशों में जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निकले प्रत्येक वचन को 18 अध्याय में संकलित किया गया है, जिसे हम 'भगवत गीता' कहते है। इन्हें जनमानस तक पहुंचाने में इस्कॉन इंटरनेशनल की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सागर जिले में अक्षय तृतीया पर सनातन संस्कृति के सूर्य का उदय हो रहा है। बुंदेलखंड महावीरों की धरती है। ऐसे में भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन के प्रसंग का अदभुत समन्वय बनेगा।

● **मंदिर के लिए भूमि देने वाले परिवार की सराहना**– मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंदिर निर्माण के लिए भूमि प्रदान करने वाले श्री विवेक यादव एवं उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सभी क्षेत्रों में विकास के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार के साथ जब समाज सहयोगी बनता है तो असंभव माने जाने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस प्रकल्प से जुड़े सभी सहयोगियों और क्षेत्रीय सांसद, मंत्रीगण, विधायकगण सहित उपस्थित सभी जनप्रतिनिधियों को भी इस्कॉन मंदिन के भूमि-पूजन कार्यक्रम के लिए बधाई दी।

● **संस्कारों से हमें प्राप्त होती है सुख-शांति**– कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि आज के दौर में संस्कारों की आवश्यकता है। संस्कारों से हमें सुख-शांति प्राप्त होती है और अपना जीवन भी सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत के बाहर एवं भारत के अंदर इस्कॉन मंदिर की अनुयायी रहते हैं। अब सागरवासियों के साथ संपूर्ण बुंदेलखंड के लिए इस्कॉन मंदिर के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम धर्म को बढ़ावा देने के लिए इस्कॉन मंदिर परिवार का अभिनंदन करते हैं। खाद्य नागरिक एवं आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि सागर में मंदिर बनने पर सागर के लोगों को रोजगार और पर्यटन के अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि यह सागर के लिए गौरव की बात है कि हमारे यहां इस्कॉन मंदिर का निर्माण हो रहा है। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि इस्कॉन इंटरनेशनल के पूरे विश्व में अनुयायी है, जो अब सागर आएंगे।

● **भव्य और दिव्य मंदिर बनने से विकास भी होगा**– सांसद श्रीमती लता वानखेड़े ने कहा कि इस्कॉन मंदिर के माध्यम से अब हमें भगवत गीता का संपूर्ण ज्ञान होगा। उन्होंने कहा कि इस भव्य एवं दिव्य मंदिर के बन जाने से सागर सहित संपूर्ण बुंदेलखंड का विकास होगा। नरयावली विधायक श्री प्रदीप लारिया ने कहा कि आज नरयावली विधानसभा धार्मिक विधानसभा बन रही है।

एमपी के चीता प्रोजेक्ट से जुड़ेगा राजस्थान

सीएम बोले- दोनों स्टेट मिलकर इसे बढ़ाएंगे

भोपाल। मध्यप्रदेश में चल रहे देश के पहले चीता प्रोजेक्ट में अब राजस्थान भी शामिल होगा। दोनों स्टेट के बीच 17 हजार वर्ग किलोमीटर का चीता कॉरिडोर बनेगा। इसमें चीता खुले में घूम सकेंगे। मंगलवार को जयपुर आए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि चीता प्रोजेक्ट पर मध्यप्रदेश अच्छे से काम कर रहा है। लेकिन, बहुत जल्द हमारा चीता प्रोजेक्ट राजस्थान के साथ जुड़कर आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा- अभी हमने मध्यप्रदेश में दो चीता अभयारण्य शुरू किए हैं। पहला पालनपुर कूनो और दूसरा गांधी सागर। इस चीता प्रोजेक्ट में राजस्थान के 7 जिले शामिल होंगे। एमपी के सीएम मोहन यादव ने कहा- यह चीता प्रोजेक्ट एशिया में अनूठा है। हमारे लिए यह खुशी की बात है कि चीता हमारे यहां सर्वाइव कर रहा है। यह विश्व के सर्वाधिक सफल होने वाले प्रोजेक्ट्स में से एक है। उन्होंने कहा- इससे पहले हम नदी जोड़ो अभियान के तहत पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना (पीकेसी-ईआरसीपी) पर काम कर रहे हैं। इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। उम्मीद करेंगे कि दोनों राज्य पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सभी प्रकार के कामों को लेकर आगे बढ़ेंगे।

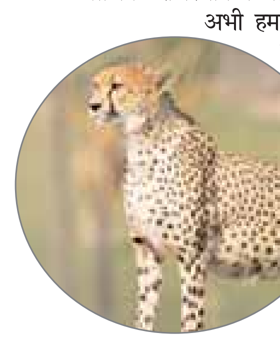

कॉरिडोर में राजस्थान का 6500 वर्ग किमी एरिया– राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की ओर से जारी एक्शन प्लान के अनुसार भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने कूनो-गांधीसागर लैंडस्केप का निर्धारण किया है।

प्लेटफॉर्म-6 के बाद अब 1 की ओर आवागमन में भी मुश्किल

● न जीआरपी, न ही स्थानीय पुलिस कर रही अतिक्रमण के खिलाफ की पुख्ता व्यवस्था, यात्रियों की ट्रेनें छूट रहीं

भोपाल। भोपाल रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 6 के बाद एक नंबर तरफ भी आना-जाना मुश्किल हो गया है। प्लेटफॉर्म नंबर 6 की ओर

लगातार बढ़ रहे अतिक्रमण और अव्यवस्था के चलते कई यात्रियों की ट्रेन तक छूट रही है। इस वजह से यात्री अब प्लेटफॉर्म नंबर एक की ओर से स्टेशन पहुंचने लगे हैं। गर्मी का सीजन होने के कारण अब इस एंट्री पर यात्रियों की संख्या 40000 के आसपास प्रतिदिन पहुंच गई है, लेकिन सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इस तरफ स्टेशन परिसर के भीतर आरपीएफ व जीआरपी और बाहर की ओर ट्रैफिक और स्थानीय थाना पुलिस की ओर से यात्री वाहनों के आवागमन के लिए कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है। इतना ही नहीं रेल प्रशासन भी इस और ध्यान नहीं दे रहा है, जिससे स्थिति दिन-व-दिन बिगड़ती जा रही है। प्लेटफॉर्म नंबर 6 की ओर मेट्रो के काम के चलते स्टेशन पर आवागमन के रास्ते में बदलाव किया गया है। लेकिन बदलाव का फायदा सीधे तौर पर यात्रियों को नहीं मिल रहा है, जिसका मुख्य कारण एंट्री पर ही अतिक्रमण और ऑटो रिक्शा सहित अन्य वाहनों का बड़ी संख्या में खड़े रहना है। उधर, इस मामले में सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया का कहना है कि वे इसी सप्ताह सर्वे करा कर स्थानीय थाना पुलिस, जीआरपी, आरपीएफ और ट्रैफिक पुलिस के साथ चर्चा कर स्टेशन आवागमन की समस्या को दूर करवाएंगे। सीजन का समय हो या कोई से दिन प्लेटफॉर्म नंबर 6 की ओर से आमतौर पर ज्यादा संख्या में यात्री आवागमन करते रहे हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का नए सिरे से गठन

● पूर्व रॉ चीफ आलोक जोशी को बनाया नया चेयरमैन ● 5 सदस्यों में आर्मी-नेवी-एयरफोर्स के पूर्व अफसर भी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव जारी है। इस बीच, सरकार ने बुधवार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन किया है। पूर्व रॉ प्रमुख आलोक जोशी को इसका अध्यक्ष बनाया गया है। यह एक बड़ा बदलाव है। यह बदलाव तब हुए जब भारत-पाकिस्तान के बीच खींचतान जारी है और उम्मीद की जा रही है कि भारत पहलगाम हमले का ठोस जवाब देगा। बहरहाल, बोर्ड के अन्य सदस्यों में कई बड़े नाम शामिल हैं। पूर्व पश्चिमी वायु सेना कमांडर एयर मार्शल पीएम सिन्हा, पूर्व दक्षिणी सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एके सिंह और रियर एडमिरल मोंटी खन्ना अब रॉ का हिस्सा होंगे। ये सभी सैन्य सेवाओं से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। राजीव रंजन वर्मा और मनमोहन सिंह भी बोर्ड में शामिल हैं। ये दोनों भारतीय पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं। बी वेंकटेश वर्मा, जो एक सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी हैं, भी

सात सदस्यीय बोर्ड का हिस्सा हैं।

NSAB एक खास तरह का समूह है। इसमें सरकार के बाहर के प्रतिष्ठित लोग शामिल होते हैं। इसका मुख्य काम राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद को लंबे समय के लिए विश्लेषण देना है। साथ ही, यह परिषद द्वारा उठाए गए मुद्दों पर समाधान और नीति विकल्प सुझाता है। यह फैसला प्रधानमंत्री ने लिया।

देश में जाति जनगणना कराएगी मोदी सरकार

● कैबिनेट की बैठक में हो गया ऐतिहासिक फैसला

जनगणना के साथ ही अब होगी जातिगत गिनती

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र की मोदी सरकार ने एक ऐतिहासिक फैसला लेते हुए आगामी जनगणना के साथ जातिगत गणना कराने का निर्णय लिया है। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में यह महत्वपूर्ण फैसला लिया गया। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट ब्रीफिंग में बताया कि सरकार ने जनगणना के दौरान जातियों की गणना को शामिल करने का निर्णय लिया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, 'राजनीतिक मामलों की कैबिनेट समिति ने आज फैसला किया है कि जातिगत गणना को आगामी जनगणना में शामिल किया जाएगा। यह कदम सामाजिक समावेशिता और नीतिगत योजनाओं को और प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण होगा। जनगणना में जाति जनगणना को

शामिल करने पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, कांग्रेस की सरकारों ने हमेशा जाति जनगणना का विरोध किया है। 2010 में दिवंगत डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा था कि जाति जनगणना के मामले पर कैबिनेट में विचार किया जाना चाहिए। इस विषय पर विचार करने के लिए मंत्रियों का एक समूह बनाया गया था।

राहुल, संविधान पढ़ने के लिए लगाए ट्यूशन

भोपाल (नप्र)। इधर केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में प्रेसवार्ता कर जातिगत गणना को मोदी सरकार को ऐतिहासिक फैसला बताया और कहा कि मोदी सरकार ने सामाजिक न्याय के लिए जनगणना के साथ जातिगत गणना का निर्णय लिया है। कांग्रेस अब झूठ और भ्रम फैलाकर श्रेय लेने की कोशिश कर रही है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए शिवराज ने कहा कि कांग्रेस बरसों सत्ता में रही है तो कुछ नहीं किया। जातिगत गणना क्यों नहीं करायी ? कर्नाटक में जातिगत सर्वे हो रहा है गणना नहीं। शिवराज ने राहुल गांधी को भी नसीहत दी और कहा कि राहुल उछल कूद मचा रहे हैं। सत्ता में रहे तब जातिगत गणना नहीं करायी, अब विपक्ष में मांग करते हैं। राहुल, संविधान पढ़ने के लिए ट्यूशन लगाएं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22 °c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे
भोपाल ■ गुरुवार, 01 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भारतीय हमले के डर से पाकिस्तान में खौफ

● एयर ट्रैफिक कंट्रोल को हाई अलर्ट पर डाला

मॉस्को/नई दिल्ली/इस्लामाबाद (एजेंसी)। दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने पहलगाम आतंकी हमले पर भारत की संभावित प्रतिक्रिया को लेकर हाई लेवल बैठक की है। माना जा रहा है कि भारत, पाकिस्तान पर हमले से पहले होमवर्क कर रहा है। पहलगाम हमले पर प्रधानमंत्री मोदी ने एक दिन पहले भारत के शीर्ष रक्षा अधिकारियों के साथ बैठक की थी

और अब सीसीएस की बैठक हुई है। माना जा रहा है कि भारत ने संभावित प्रतिक्रिया को लेकर प्लान बना लिया है और अब उस प्लान को कैसे अंजाम दिया जाए और भारत के हमले के बाद कैसी परिस्थितियां बनेंगी, उसपर रणनीति बनाई जा रही है। गौर करने वाली बात ये है कि एक तरफ जहां पाकिस्तान के रक्षा मंत्री से लेकर विदेश मंत्री और अन्य नेता बार बार प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे हैं, विदेशी नेताओं से बात कर रहे हैं, वहीं भारत सरकार के मंत्री सार्वजनिक तौर पर कुछ नहीं कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि भारत सरकार इस बार किसी भी बातचीत करने के या किसी भी देश को अपना स्टैंड समझाने के मूड में नहीं है। ऐसा लग रहा है कि भारत खुद तय करेगा कि उसे पाकिस्तान के खिलाफ क्या कार्रवाई करनी है।

क्लासरूम-घोटाला

सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के खिलाफ मामला दर्ज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में एएपी नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, दिल्ली के पूर्व पीडब्ल्यूडी मंत्री सत्येंद्र जैन के खिलाफ करप्शन का मामला दर्ज किया गया है। करप्शन का यह मामला क्लासरूम और स्कूल बिल्डिंग के निर्माण से जुड़ा है। एंटी करप्शन ब्रांच की जांच में पता चला है कि एएपी के कार्यकाल के दौरान 12,748 क्लास/बिल्डिंग के निर्माण में 2,000 करोड़ रुपए का भारी घोटाला हुआ था। क्लासरूम/बिल्डिंग के निर्माण की लागत बढ़ाकर दर्शाई गई थी। इसके अलावा निर्धारित अवधि के

भीतर एक भी काम पूरा नहीं हुआ था। निर्माण कार्य के लिए कंसलटेंट और आर्किटेक्ट की नियुक्ति भी मनमाने ढंग से की गई थी। इन्हीं के जरिए निर्माण की लागत बढ़ाई गई। एटीएस ने इस मामले में भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम की धारा 17ए के तहत अनुमति मिलने के बाद एफआईआर दर्ज की है। ठेका भी पार्टी के ही 34 ठेकेदारों को दिया गया एटीएस की जांच में खुलासा हुआ है कि क्लासरूम्स को रूप में बनाया गया, जिसकी उम्र 30 साल होती है, लेकिन इसकी लागत क्लासरूम्स के बराबर दिखाई गई, जिसकी उम्र 75 साल होती है।

पाकिस्तान से तनाव के बीच मोदी का रूस दौरा स्थगित

राष्ट्रपति पुतिन के संग विक्ट्री डे परेड में होना था शामिल

मॉस्को (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी का रूस दौरा स्थगित हो गया है। वह रूस में विक्ट्री डे परेड में भी रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ शामिल होने वाले थे, लेकिन अब उनके कार्यक्रम को स्थगित किया गया है। माना जा रहा है कि पहलगाम आतंकी हमले और उसके बाद पाकिस्तान से उपजे तनाव के चलते दौरे को रद्द करने का फैसला हुआ है। रूसी राष्ट्रपति कार्यालय क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने भी

इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी 9 मई को मॉस्को में होने वाली विक्ट्री डे परेड में शामिल होने वाले थे। इसे लेकर दोनों देशों में उत्साह था, लेकिन कुछ दिन पहले ही इसे स्थगित करने की जानकारी आई है। पीएम नरेंद्र मोदी के स्थान पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। सोवियत संघ की नाजीवादी जर्मनी पर दूसरे विश्व युद्ध में जीत की वर्षगांठ पर विक्ट्री डे परेड का आयोजन होता है। इस मौके पर रूस की सेना राजधानी मॉस्को में अपनी ताकत का प्रदर्शन भी करती है। यह भारत की रिपब्लिक डे परेड की तरह होता है। पीएम नरेंद्र मोदी के अलावा रूस ने कई अन्य नेताओं को भी इस मौके पर आमंत्रित किया था। इनमें से एक शी जिनपिंग हैं।

बांग्लादेश में हिंदू संत चिन्मय दास को मिली जमानत

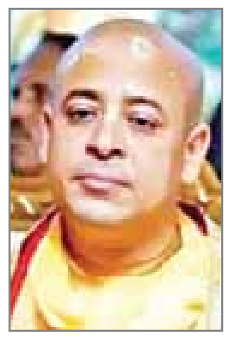

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश के हाईकोर्ट ने जेल में बंद हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास को जमानत दे दी है। चिन्मय दास पिछले 5 महीनों से देशद्रोह के आरोप में जेल में बंद थे। चिन्मय के वकील अपूर्व कुमार भट्टाचार्य ने 23 अप्रैल को हाई कोर्ट में जमानत याचिका दायर की थी। बांग्लादेशी अखबार द डेली स्टार ने चिन्मय दास के वकील के हवाले से बताया है कि अभी चिन्मय की रिहाई तय नहीं हुई है। अगर बांग्लादेशी सुप्रीम कोर्ट इस फैसले पर रोक नहीं लगाता है तो चिन्मय दास को रिहा कर दिया जाएगा। चिन्मय दास पर बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज के अपमान का आरोप है। इस मामले में राजद्रोह का केस दर्ज कर उन्हें 25 नवंबर 2024 को गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले 2 जनवरी को चटगांव की निचली अदालत ने उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी। बांग्लादेश पुलिस ने पिछले साल 25 नवंबर को ढाका के हजरत शाहजलाल इंटरनेशनल एयरपोर्ट से चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी को गिरफ्तार किया था। तब वे चटगांव जा रहे थे। मौके पर मौजूद इस्कॉन के सदस्यों ने कहा कि डीबी पुलिस ने कोई गिरफ्तारी वारंट नहीं दिखाया।

रामलला के दर्शन को राम मंदिर पहुंच गए हनुमानगढ़ी के महंत

● 121 साल पुरानी परंपरा को तोड़कर लिया ऐतिहासिक फैसला

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में रामलला के दर्शन के लिए बुधवार को हनुमानगढ़ी के गद्दीनशीन महंत प्रेमदास ने 121 साल पुरानी परंपरा को संतों की सहमति मिलने के बाद तोड़ दिया। इसके साथ ही हनुमान गढ़ी का कोई गद्दीनशीन महंत 1904 के बाद पहली बार 52 बीघे की परिधि से बाहर निकला है। महंत प्रेमदास ने न सिर्फ रामलला का दर्शन किया बल्कि राम मंदिर की अंतरगृही परिक्रमा का भी शुभारम्भ किया है। राम मंदिर के निर्माण के बाद पहली बार वीवीआईपी के लिए परिक्रमा खोली गई है। गद्दीनशीन महंत सहित अन्य संतों-महंतों ने भगवान के साथ रामरक्षा स्तोत्र का पाठ किया।

रामलला को 56 भोग भी लगाया गया। इससे पहले हनुमानगढ़ी अखाड़े के निशान के साथ गद्दीनशीन महंत प्रेम दास की नगर में शोभायात्रा निकाली गई। इसका जगह-जगह स्वागत हुआ। हनुमानगढ़ी की नियमा वली के अनुसार गद्दी नशीन पद पर प्रतिष्ठित महंत आजीवन परिसर के 52 बीघे की परिधि के बाहर नहीं निकल सकते हैं। इसी नियम के कारण महंत प्रेम दास राम मंदिर के निर्माण के बाद भी रामलला के दर्शन नहीं कर सके। इस दौरान अखाड़े के नागा संत व शिष्य श्रद्धालु भी शामिल रहे। हनुमानगढ़ी से शोभायात्रा पहले सरयू तट पहुंचीं। यहां गद्दी नशीन महंत और अन्य नागा संतों मां सरयू का पूजन किया। इसके बाद शोभायात्रा राम मंदिर पहुंची।

'धर्मांतरण' पर सुनवाई की तय हो गई तारीख

● रिटायरमेंट के दिन से सुनवाई शुरू करेंगे सीजेआई जस्टिस खन्ना

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ के सामने बुधवार को भाजपा नेता और अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने देश भर में धर्म-परिवर्तन विरोधी कानूनों को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करने की मांग की।

इस पर सीजेआई खन्ना ने कहा कि निश्चित तौर पर इस पर सुनवाई करेंगे लेकिन उन्होंने इसके लिए एक ऐसी तारीख दे दी, जो चर्चा का विषय बन गई है। दरअसल, जिस पीठ के सामने इस याचिका पर सुनवाई की मांग की गई, वह सीजेआई संजीव खन्ना और जस्टिस पीवी संजय कुमार की पीठ थी। पीठ ने मामले की संक्षिप्त सुनवाई के दौरान कहा कि इस मामले पर विस्तार से सुनवाई की जरूरत है। इसी दौरान सीजेआई खन्ना ने कहा, हमें इस पर विस्तार से सुनवाई करने की जरूरत है। इसे 13 मई, 2025 से शुरू होने वाले सप्ताह में सूचीबद्ध किया जाए। बता दें कि जस्टिस खन्ना 13 मई को ही रिटायर हो रहे हैं। यानी वह तारीख उनके कार्यकाल का आखिरी दिन होगा। 14 मई को जस्टिस बीआर गवई देश के नए मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ लेंगे।

हर दिन 10 हजार हिंदुओं का धर्मांतरण हो रहा

बार एंड बेंच की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जब सीजेआई सुनवाई की तारीख तय कर रहे थे, तभी अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने कहा, माई लॉर्ड! धर्मांतरण एक युद्ध छेड़ने जैसा है, हर दिन 10 हजार हिंदुओं का धर्मांतरण हो रहा है। दरअसल, उपाध्याय ने अवैध धर्मांतरण के खिलाफ जनहित याचिका दायर की है और इस पर त्वरित सुनवाई की मांग कर रहे थे। उन्होंने चुनौती दिए जा रहे धर्मांतरण विरोधी कानूनों का बचाव करते हुए आरोप लगाया कि हर दिन हजारों हिंदुओं का अवैध रूप से दूसरे धर्मों में धर्मांतरण किया जा रहा है।

दूसरे पक्ष को सुने बिना सुनवाई नहीं

हालांकि, कोर्ट आज अन्य याचिकाकर्ताओं की सुनवाई किए बिना उनकी दलीलें सुनने को तैयार नहीं हुआ। पीठ ने कहा, आप बहस क्यों कर रहे हैं। क्या हमने दूसरे पक्ष को सुना है। हमें पहले उन्हें सुनना होगा। इन कानूनों का उद्देश्य जबरन या गैरकानूनी तरीके से होने वाले धर्म परिवर्तन से निपटना है लेकिन आलोचकों का आरोप है कि इन कानूनों का दुरुपयोग एक खास धार्मिक समुदाय को टारगेट करने के लिए किया जा रहा है और ये लोगों की अपना धर्म चुनने की आजादी को प्रभावित करते हैं। इस पर कई याचिकाएं दायर की गई हैं।

● आंध्र प्रदेश के सिंहाचलम मंदिर में बड़ा हादसा

मंदिर की दीवार गिरने से 8 श्रद्धालुओं की मौत

हैदराबाद (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के प्रसिद्ध श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर में बुधवार तड़के एक दर्दनाक हादसे में कम से कम आठ श्रद्धालुओं की मौत हो गई। इस दुखद दुर्घटना में चार गंभीर रूप से घायल हो गए। यह हादसा उस वक्त हुआ जब 'चंदनोत्सवम' के अवसर पर 'निजरूप दर्शन' के लिए श्रद्धालु कतार में खड़े थे। आपको बता दें कि इस मंदिर को सिंहाचलम मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

घटना तड़के करीब 2.30 बजे घटी। भारी बारिश के कारण एक दीवार कतार मार्ग के पास स्थित एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पास अचानक ढह गई। बताया जा रहा है कि दीवार नई बनी थी और बारिश के चलते मिट्टी ढीली हो जाने से यह हादसा हुआ। राज्य की गृह मंत्री वंगलापुडी अनीता ने मौके पर पहुंचकर घटना का जायजा लिया और बताया कि यह दुर्घटना भारी बारिश और श्रद्धालुओं के दबाव के कारण हुई। उन्होंने कहा, श्रद्धालु 300 रुपये के विशेष दर्शन टिकट के साथ कतार में खड़े थे। दीवार बारिश के कारण पानी से भीग चुकी थी और कमजोर हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) और स्थानीय प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया।

पाकिस्तान ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर खाली की चौकियां

झंडे भी उतारे, पंजाब से लेकर गुजरात तक हाईअलर्ट से निकली हवा

श्रीनगर (एजेंसी)। पहगाम आतंकी हमले को जवाब देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को खुली छूट का ऐलान किया है। पीएम मोदी ने कहा है कि सेना जगह, समय और जवाब अपने हिसाब से चुने। पाकिस्तान को कड़ा जवाब देने से पहले भारत की तरफ की जा रही मजबूत तैयारी के बीच सामने आया है कि दोनों देशों की अंतरराष्ट्रीय सीमा की कुछ पोस्ट पर पाकिस्तान सैनिक पीछे हट गए हैं। पाकिस्तान की पोस्ट पर झंडे उतार लिए गए हैं। मीडिया रिपोर्ट के बुधवार को पाकिस्तानी सेना ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर कई पोस्ट खाली कर दी हैं। पाकिस्तानी सेना ने इन पोस्ट से

झंडे भी हटा लिए हैं। पाकिस्तान ने कठुआ के पर्गवाल इलाके में ये पोस्ट खाली की हैं। पहलगाम आतंकी हमले के बाद जम्मू-कश्मीर में एलओसी पर तनाव बना हुआ है। अभी सीजफायर का कई बार उल्लंघन हो चुका है। पहलगाम आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत के बाद पाकिस्तान को कड़े जवाब की मांग हो रही है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद कश्मीर में सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हैं। लश्कर से जुड़े आतंकवादियों पर कार्रवाई के बीच पुलिस ने कश्मीर में चेतावनी जारी की है। पुलिस ने लाउडस्पीकर और दीवारों पर संदेश लिखकर लोगों से कहा है कि वे इत्तेहाद-उल-मुस्लिमीन और अवामी एक्शन कमेटी से अलग होने को कहा गया। लाउडस्पीकर से घोषणाएं की गईं और पोस्टर लगाए गए। कश्मीर में 48 टूरिस्ट प्लेस को पहले ही बंद कराया जा चुका है।

पहलगाम में मारे गए शुभम के परिवार से मिले राहुल

पत्नी रोने लगीं तो गले लगाया

अमेठी (एजेंसी)। राहुल गांधी के यूपी दौरे का बुधवार को दूसरा दिन है। मंगलवार को उन्होंने पहलगाम हमले में मारे गए कानपुर के शुभम द्विवेदी के परिजनों से मुलाकात की। शुभम की पत्नी ऐशन्या राहुल को देखकर रोने लगीं। इस पर राहुल ने उन्हें गले लगा लिया और सांत्वना दी। शुभम के पिता भी राहुल को देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए। ऐशन्या ने राहुल को पहलगाम में हुई घटना के बारे में सब कुछ बताया। उन्होंने बताया कि कैसे मेरे पति को आतंकियों ने गोली मार दी। ऐशन्या ने बताया कि हर जगह सुरक्षा की व्यवस्था थी, लेकिन पहलगाम में कोई सिक्योरिटी नहीं थी। ऐशन्या ने राहुल गांधी को बताया- 22 अप्रैल को दोपहर 2.25 बजे हम लोग लंच कर रहे थे। तभी नॉर्मल कपड़ों में एक आतंकी आया। उसने पूछा- हिंदू हो या मुसलमान। हिंदू कहते ही सिर्फ 5 सेकेंड में मेरे पति को गोली मार दी। राहुल ने पूछा- यह सब कितनी देर तक चला। इस पर ऐशन्या ने कहा- करीब 45 मिनट तक आतंकियों ने खून-खराबा किया। वे आराम से लोगों से नाम पूछ-पूछकर उन्हें मार रहे थे। उन्हें यह टारगेट दिया गया था कि पत्नी के सामने पति की हत्या करनी है। वे महिलाओं से कहते थे कि जाकर अपनी सरकार को बताओ। मैं तुम्हारे पति को मार रहा हूं, तुम्हें नहीं मारूंगा। राहुल ने फिर पूछा- जो लोग घायल थे, वे नीचे कैसे पहुंचे। ऐशन्या ने जवाब दिया- सर, मुझे मेरी बहन घसीटकर नीचे ले आई।

केरल में स्कूल का नाम हेडगेवार रखने पर बवाल

पलक्कड़ (एजेंसी)। केरल के पलक्कड़ नगर पालिका में एक विशेष स्कूल का नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक डॉ. के.बी. हेडगेवार के नाम पर रखने के फैसले ने राजनीतिक विवाद को जन्म दे दिया है। इस मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और विपक्षी दलों कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई एम) के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली, जिसके चलते मंगलवार को नगर पालिका की बैठक में हंगामा और हिंसक झड़पें हुईं। टीवी चैनलों पर दिखाए गए दृश्यों में भाजपा और एलडीएफ (लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट) एवं यूडीएफ (यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट) के पार्षदों के बीच झड़प की भी घटनाएं नजर आ रही हैं क्योंकि हॉल में मौजूद पुलिस ने दोनों समूहों को अलग करने और उन्हें बाहर ले जाने की कोशिश की।

सिर्फ एक को मारेंगे, जो लाख के बराबर होगा

● लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने पाकिस्तान को दी धमकी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। कुख्यात लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला लेने की धमकी दी है। इस गैंग की धमकी से जुड़ा सोशल मीडिया पोस्ट वायरल हो रहा है

जिसमें गैंग ने लिखा है कि पहलगाम हमले में निर्दोष लोगों की हत्या का जवाब देने के लिए हम पाकिस्तान में घुसकर एक ऐसे आदमी को मारेंगे, जो एक लाख के बराबर होगा। पोस्ट में आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के सरगना हाफिज सईद का फोटो भी लगा है और उस पर क्रॉस का चिह्न लगाया गया है। यह पोस्ट सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। भारत में कई आपराधिक वारदातों को अंजाम दे चुका लॉरेंस बिश्नोई गिरोह अक्सर सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर अपने गुनाहों की जिम्मेदारी लेता रहा है। हालांकि उसके इस पोस्ट में कितनी सच्चाई है और क्या इसे गैंग ने ही पोस्ट किया है, इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है लेकिन यह पोस्ट सोशल मीडिया पर तेजी से फैल रहा है। अक्सर लॉरेंस बिश्नोई गैंग पर पाकिस्तानी गैंगस्टरों और डॉन से रिश्ते रखने के आरोप लगते रहे हैं। कई अपराधों में पुलिस लॉरेंस बिश्नोई के पाकिस्तान से रिश्तों की बात कहते हुए सबूत भी दे चुकी है लेकिन जेल से हुए लॉरेंस बिश्नोई के कथित इंटरव्यू में वह इस बात को नकार चुका है। लॉरेंस ने खुद को देशभक्त बताया है।

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और डिंडोरी कलेक्टर जाएंगे ट्रेनिंग पर

- मिड करियर ट्रेनिंग के लिए 53 आईएएस किए गए हैं चिन्हित
- चंद्रमौली शुक्ला, ईलैया और राज्यपाल के सचिव भी लिस्ट में

भोपाल। एमपी कैडर के 53 आईएएस अधिकारियों को जून से शुरू होने वाली मिड करियर ट्रेनिंग के लिए बुलाया गया है। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी ने ऐसे अफसरों की सूची जारी कर 16 मई तक इसके लिए रजिस्ट्रेशन कराने के निर्देश दिए हैं। इस सूची में मोहन सरकार के भोपाल, इंदौर, ग्वालियर समेत चार जिलों के कलेक्टर और सीएम सचिवालय में पदस्थ दोनों सचिव भी शामिल हैं। सूची में शामिल अफसरों को लेकर कहा गया है कि ये अधिकारी किसी न किसी कारण या बहाना बनाकर ट्रेनिंग से बच रहे हैं। जबकि वर्किंग एफिशिएंसी में सुधार के लिए यह ट्रेनिंग जरूरी है। यह सभी 53 अफसर सचिव व अपर सचिव कैडर के अधिकारी हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के लिए मिड करियर प्रशिक्षण कार्यक्रम (एमसीटीपी) 2007 में शुरू हुआ है। अफसरों की वर्किंग एफिशिएंसी में सुधार के लिए कराए जाने वाले इस ट्रेनिंग प्रोग्राम में अफसरों को तीन मौके दिए जाते हैं। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी के साथ एमसीटीपी के रिव्यू के दौरान यह बात सामने आई है कि पात्रता के बाद भी किसी न किसी बहाने अधिकारी प्रशिक्षण से बच रहे हैं। इसलिए एक बार फिर ऐसे पात्र अफसरों की सूची जारी की गई है और उन्हें 16 जून से 11 जुलाई तक होने वाले एमसीटीपी के चौथे चरण की ट्रेनिंग के लिए सूचित किया गया है। इस ट्रेनिंग के लिए बुलाए गए देश भर के कुल 779 अफसरों को 16 मई तक रजिस्ट्रेशन कराने के लिए कहा गया है। अफसरों को ट्रेनिंग में शामिल होने की सहमति 26 मई तक देने के लिए कहा गया है। इस ट्रेनिंग में 2011 बैच के अफसरों को पहला अवसर, 2010 बैच के अफसरों को दूसरा मौका और 2009 बैच के अफसरों को तीसरा प्रशिक्षण मौका दिया जा रहा है। जो अफसर 31 दिसम्बर 2028 के पहले रिटायर हो रहे हैं, उन्हें इस प्रशिक्षण के लिए पात्र नहीं माना गया है।

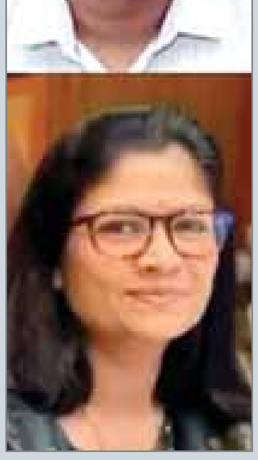

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर कलेक्टर के भी नाम

ट्रेनिंग के लिए पात्र अफसरों की सूची में मुख्यमंत्री सचिवालय के दोनों सचिव सीबी चक्रवर्ती एम, टी इलैया राजा के भी नाम हैं। इसके अलावा चार जिलों के कलेक्टर आशीष सिंह इंदौर, कौशलेंद्र विक्रम सिंह भोपाल, रुचिका चौहान ग्वालियर, नेहा मारव्या सिंह डिंडोरी के भी नाम हैं। एमपीएसआईडीसी के एमडी चंद्रमौलि शुक्ला, सचिव वित्त विभाग लोकेश कुमार जाटव, एमडी एमपीआरडीसी भरत यादव, आयुक्त लोक शिक्षण संचालनालय शिल्पा गुप्ता, संचालक कृषि अजय गुप्ता, सचिव राज्य निर्वाचन आयोग अभिषेक सिंह, आयुक्त स्वास्थ्य तरुण राठी, आबकारी आयुक्त अभिजीत अग्रवाल, राज्यपाल के सचिव उमाशंकर भार्गव का नाम भी प्रशिक्षण के लिए चिह्नित अफसरों की सूची में शामिल है।

एमपी के 6 जिलों में बारिश, तीन में लू का अलर्ट

भोपाल-उज्जैन में तेज गर्मी, सीधी में आंधी से मकान ढहा, रतलाम में शॉर्ट सर्किट-आग लगी

भोपाल। मध्यप्रदेश में गर्मी के तेवर तीखे होते जा रहे हैं। आज भोपाल-इंदौर, उज्जैन समेत अधिकतर जिलों में धूप खिली है। मौसम विभाग ने रतलाम, नीमच-मंदसौर में लू का अलर्ट जारी किया है। वहीं, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, शहडोल और अनूपपुर में हल्की बारिश हो सकती है। बुधवार सुबह करीब 9 बजे सीधी में रामपुर नैकिन के भितरी गांव में आंधी से अखिलेश दुबे का कच्चा मकान ढह गया। कई मकानों की सीमेंट की चादर से बनी छतें उड़ गईं। रतलाम के आनंदगढ़ में तेज हवा की वजह से शॉर्ट सर्किट हो गया। इससे लगी आग में गेहूं, लहसुन और पशु चारा जल गया। दो बकरियों की झुलसकर मौत हो गई। इससे पहले मंगलवार शाम नर्मदापुरम के डोलरिया में तेज आंधी चली। इसमें सामूहिक विवाह सम्मेलन का टेंट उड़ गया। मौसम विभाग के मुताबिक, 2 और 3 मई को मध्यप्रदेश के करीब 40 जिलों में बारिश हो सकती है। इनमें भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर भी शामिल हैं। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से ऐसा होगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि साइक्लोनिक सर्कुलेशन और टर्फ की वजह से मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में पिछले दो-तीन दिन से बारिश हो रही है। बुधवार को भी कुछ जिलों में इसका असर देखने को मिलेगा। वहीं, राजस्थान और गुजरात से जुड़े जिलों में हीट वेव यानी लू चल सकती है। 2 मई को वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। जिसका असर अगले 3 दिन तक रह सकता है। मंगलवार को सिवनी, दमोह, सिंगरौली,

अनूपपुर और पन्ना में तेज आंधी चली। रीवा, कटनी, शहडोल, नरसिंहपुर, बालाघाट, छिंदवाड़ा, सतना, सीधी, मंडला, रायसेन, भोपाल, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, मैहर, उमरिया, जबलपुर, डिंडौरी, पांढुर्णा और सागर में भी मौसम बदला रहा। मंडला में ओले भी गिरे। 8 शहरों में तापमान 43 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया। भोपाल में सुबह से ही बादल छाए रहे। हालांकि, गर्मी का असर बरकरार रहा। यहां मंगलवार को अधिकतम तापमान 41.8 डिग्री सेल्सियस, इंदौर में 42.6 डिग्री, ग्वालियर में 38.8 डिग्री, उज्जैन में 43 डिग्री और जबलपुर में 40 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उत्तर-पश्चिमी हवाओं के लगातार जोर पकड़ने के साथ पूरे प्रदेश में न्यूनतम तापमान सामान्य से 3-4 डिग्री अधिक यानि 27 से 30 डिग्री सेल्सियस तक है। दिन के साथ रातें भी गर्म हो गई हैं। अप्रैल के आखिरी सप्ताह में ग्वालियर, चंबल, सागर और रीवा संभाग में पारा 43-44 डिग्री जबकि इंदौर, उज्जैन-भोपाल सहित बाकी प्रदेश में 41 से 44 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। बंगाल क्षेत्र में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से अप्रैल के आखिरी में 3 से 4 दिन तक लू का असर रह सकता है। अप्रैल के पहले, दूसरे और तीसरे सप्ताह में तेज गर्मी और बारिश का दौर बना रहा। पहले सप्ताह में सभी संभागों में सामान्य से 2-3 डिग्री ज्यादा 21-24 डिग्री सेल्सियस तापमान रहा। वहीं, दिन में पश्चिमी गर्म हवाओं के कारण अधिकतम तापमान इंदौर, सागर और नर्मदापुरम संभागों में सामान्य से ज्यादा 39 से 44 डिग्री तक पहुंच गया। उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर समेत बाकी संभागों में यह 41 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। पहले सप्ताह रतलाम में लू चल चुकी है। वहीं, बाकी शहरों में गर्म हवाओं से गर्मी बढ़ी रही। मध्यप्रदेश में अप्रैल के दूसरे पखवाड़े से गर्मी का असर तेज होने लगता है। महीने के आखिरी दिनों में तो तापमान रिकॉर्ड तोड़ देता है। भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर के 10 साल की डेटा बेस्ड स्टडी में सामने आया कि भोपाल-इंदौर में पारा 43 डिग्री तक पहुंचा जबकि जबलपुर में आंकड़े ने 44 डिग्री सेल्सियस को छू लिया। ग्वालियर में तो तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच चुका है। पिछले तीन साल इन शहरों में तेज गर्मी पड़ी। इस बार भी तापमान में बढ़ोतरी हो रही है।

बीजेपी प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा की हार्ट अटैक से मौत

- सीहोर में तबीयत बिगड़ी, घर पहुंचने पर हो गए बेहोश
- कमलनाथ के मीडिया को-ऑर्डिनेटर भी रहे

भोपाल। मध्यप्रदेश बीजेपी के प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा की हार्ट अटैक से मौत हो गई। बुधवार को सीने में दर्द की शिकायत के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। इससे पहले सलूजा कांग्रेस में रहते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलनाथ के मीडिया को-ऑर्डिनेटर रह चुके थे। जानकारी के मुताबिक वे मंगलवार रात को सीहोर के एक रिसोर्ट में शादी समारोह में शामिल हुए थे। बुधवार सुबह उनकी तबीयत खराब हो गई। सीहोर से इंदौर लौटते समय भी उन्हें दिक्कत हो रही थी। दोस्तों ने उन्हें हॉस्पिटल में दिखाने के लिए कहा तो उन्होंने कहा, कुछ नहीं बस एसिडिटी है। परिवार के मुताबिक- सीहोर के क्रिसेंट पार्क में एक शादी में शामिल होने के बाद वे बुधवार दोपहर ही इंदौर लौटे थे। घर पर खाना खाने के बाद थोड़ी घबराहट हुई, फिर उल्टी हुई और हालत बिगड़ गई। परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे तो डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। नरेंद्र सलूजा की बेटी अमेरिका में रहती है। उन्हें आने में 48 घंटे का समय लगेगा। बेटी के अमेरिका से इंदौर आने के बाद ही अंतिम संस्कार किया जाएगा। नरेंद्र सलूजा सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते थे। उन्होंने अपने आखिरी ट्वीट में अक्षय तृतीया की शुभकामनाएं देते हुए एक फोटो पोस्ट की थी। सलूजा के निधन पर भाजपा संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा, मंत्री तुलसी सिलावट, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, इंदौर-2 के विधायक रमेश मेंदोला, इंदौर महापौर पुष्यमित्र भार्गव सहित कई नेताओं ने दुख जताते हुए श्रद्धांजलि दी है।

दोस्त बोले- हमने अपने सच्चा हमदर्द खो दिया

नरेंद्र सलूजा के मित्र और पत्रकार अरविंद तिवारी ने कहा कि मैंने एक सच्चा हमदर्द खो दिया है। मेरे उनसे 25 साल पुराने संबंध थे। वे सबसे सक्रिय प्रवक्ताओं में शामिल थे। वे सिख समाज के हर आयोजन में सक्रिय रहते थे। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के दौरान पूर्व सीएम कमलनाथ का साथ छोड़कर नरेंद्र सलूजा ने 25 नवंबर 2022 को बीजेपी जॉइन की थी। तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान ने सीएम हाउस में उन्हें बीजेपी की सदस्यता दिलाई थी। शिवराज सिंह चौहान के हाथों बीजेपी की सदस्यता लेने के बाद नरेंद्र सलूजा ने कहा था- कमलनाथ जी जब मध्यप्रदेश में 1 मई 2018 को आए थे, तो उन्होंने सबसे पहला पत्र देते हुए मुझे अपना मीडिया को-ऑर्डिनेटर बनाया था। जबसे मैं उनसे जुड़ा, कई लोगों ने कहा था कि 1984 के दंगों में उनका नाम है। मुझे लगता था कि राजनीतिक विद्वेषता के कारण कुछ लोग ऐसा कहते हैं। इस बीच 8 नवंबर को मैं उनके साथ गुरुनानक जी के प्रकाश पर्व पर इंदौर के खालसा स्टेडियम में गया। वहां पर उन्होंने मत्था टेका। देश के प्रसिद्ध कीर्तनकार मनप्रीत सिंह कानपुरी, जिन पर सिखों की आस्था है उन्होंने जो शब्द कहे, वे मेरे कानों में गूंजने लगे। मैं दो-तीन दिन से सो नहीं पाया। उन्होंने कहा था कि यहां एक ऐसे नेता का सम्मान हो रहा है, जिसने 1984 के दंगों में टायर डालकर लोगों को जिस भीड़ ने जलाया, उसका नेतृत्व किया। उनके शब्दों ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया। नरेंद्र सलूजा कांग्रेस में रहने के दौरान कमलनाथ के बतौर मीडिया को-ऑर्डिनेटर बीजेपी पर हमलावर रहते थे। कांग्रेस के साथ ही बीजेपी की गतिविधियों, नेताओं के भाषणों पर पैनी नजर रखते थे। वे मुख्यमंत्री से लेकर बीजेपी नेताओं के भाषणों, सरकार के अच्छे फैसलों को सोशल मीडिया के जरिए साझा करते थे। कांग्रेस में होने वाली बैठकों के अंदर की खबरों और कार्यक्रमों पर बारीकी से नजर रखते थे।

खाद वितरण में गड़बड़ी रोकने का एसडीओ का तगड़ा प्लान

- किसान बनकर डेढ़ घंटे तक खुद लाइन में लगे, जानी हकीकत

भोपाल। अक्सर खाद की जरूरत फसल बोनी के समय होती है। लेकिन मध्य प्रदेश के अशोकनगर में डीएपी खाद की किल्लत अभी से शुरू हो गई है। इसके चलते खाद वितरण केंद्रों में किसानों की लंबी लाइन नजर आ रही है। वहीं, कई जगह हालात ऐसे बने कि लाइन में किसानों के बीच मारपीट शुरू हो गई। प्रशासन को पुलिस तक बुलानी पड़ गई। दरअसल, जिले में खाद वितरण में कोई गड़बड़ी न हो और किसानों के बीच भगदड़ की स्थिति न बने इसलिए प्रशासन के अधिकारी अलर्ट है। उन्होंने खाद वितरण के दौरान खास प्लान बनाया। किसानों के बीच झगड़े और मारपीट की स्थिति नहीं बने इसके लिए एसडीओ को किसान बनाकर लाइन में लगाया गया। डेढ़ घंटे

तक वह किसान बनकर खाद वितरण होने तक लगे रहे। जिले में मक्के की फसल का रकबा बढ़ गया है। इसकी वजह से डीएपी खाद के लिए किसान अभी से व्यवस्था करने में जुट गए हैं। इसके चलते खाद वितरण के दूसरे दिन भी टोकन वाले किसानों को ही खाद का वितरण किया गया। प्रशासन ने यह व्यवस्था एक दिन पहले किसानों में हुई मारपीट और हंगामा को देखते हुए लिया गया है। खाद वितरण केंद्र पर टोकन न. 2400 तक के किसानों को ही उपलब्धता के चलते खाद देना था। ऐसे में कोई गड़बड़ी ना हो इसलिए प्रशासन ने गजब जुगाड़ लगाया। कृषि विभाग एसएडीओ मुकेश रघुवंशी को अंतिम टोकन वाले किसान के पीछे खड़ा कर दिया गया। ताकि कोई किसान लाइन में लग कर गड़बड़ी करके ये न कह पाए कि हम घंटों से लाइन में लगे थे। इस दौरान एसडीएम बृजबिहारी श्रीवास्तव लगातार दूसरे दिन भी खाद वितरण पर विशेष फोकस बनाए रहे।

भोपाल रेप-लव जिहाद मामले में हो रहे नित नए खुलासे

अब पांचवीं पीड़िता भी आई सामने, बताई कांड की असली हकीकत

- आरोपी के मोबाइल में मिला वीडियो, राष्ट्रीय महिला आयोग करेगा जांच

भोपाल। भोपाल के एक निजी कॉलेज में छात्राओं के साथ हुए रेप, ब्लैकमेलिंग और लव जिहाद के मामले में पांचवीं पीड़िता सामने आई। युवती ने परिजन के साथ बागसेवनिया थाने में एफआईआर दर्ज कराई। पीड़िता भोपाल की रहने वाली है। आरोपी फरहान के मोबाइल में इस युवती का वीडियो पुलिस को मिला था। कड़ी सुरक्षा में उसके बयान दर्ज किए गए। पुलिस के मुताबिक मामले में दो और पीड़िता सामने आ सकती हैं। आरोपियों के मोबाइल से 7 छात्राओं के एक दर्जन से अधिक वीडियो मिले हैं। इधर, राष्ट्रीय महिला आयोग भी इस मामले की जांच करेगा। आयोग ने तीन सदस्यीय कमेटी बनाई है। झारखंड की पूर्व डीजीपी निर्मला कौर समिति की अध्यक्ष नियुक्त की गई। इससे पहले मंगलवार को रेप के आरोपी अली का पुलिस ने स्पॉट वेरिफिकेशन कराया है। डीसीपी संजय अग्रवाल ने बताया कि पुलिस ने कपड़े समेत अन्य सामान को जब्त किया है। अली इन चीजों का इस्तेमाल युवती से मारपीट में करता था। पुलिस पहले ही घटना में इस्तेमाल की गई फरहान की बाइक जब्त कर चुकी है, अब अली की बाइक की जब्ती की जाएगी। मामले में अब तक कुल चार आरोपी

गिरफ्तार किए जा चुके हैं। मुख्य आरोपी फरहान अली और अली खान पर दुष्कर्म और दो अन्य आरोपियों पर पुलिस ने दुष्कर्म में सहयोग का केस दर्ज किया है।

आरोपियों के परिवार की भूमिका की भी जांच- इससे पहले खुलासा हुआ है कि मुख्य आरोपी फरहान ने अपने ही घर में एक छात्रा से रेप किया था, और इस बात की जानकारी उसकी बड़ी बहन को भी थी। वहीं, जून 2024 में अली ने एक नाबालिग छात्रा से अपने घर में ही ज्यादती की थी। घटना के समय सुबह के चार बजे अली का बड़ा भाई और मां भी घर में मौजूद थे, लेकिन दोनों सो रहे थे। पुलिस की आरोपियों के परिवारजनों की भूमिका की भी जांच करेगी। अली को सोमवार सुबह भोपाल की निजामुद्दीन कॉलोनी से गिरफ्तार किया गया था। पुलिस को सूचना मिली थी कि वह एक महिला मित्र के घर छिपा है। पुलिस ने अली का मोबाइल फोन जब्त कर लिया था। इसकी जांच की जा रही है। गिरफ्तारी के दौरान अली ने दीवार फांदकर भागने की कोशिश की थी। इस दौरान उसका एक पांव फ्रैक्चर हो गया। पुलिस अब यह भी पता लगा रही है कि फरारी के दौरान अली को किसने मदद पहुंचाई। इन लोगों को भी आरोपी के सहयोगी के रूप में जांच में शामिल किया जा सकता है।

आरोपियों का जुलूस निकालकर कोर्ट में किया पेश- पुलिस ने बागसेवनिया थाने के सामने आरोपियों का जुलूस निकाला था। इसके बाद सभी को कोर्ट में पेश किया था। पुलिस ने उनकी रिमांड मांगी है।

फरहान की रिमांड पूरी होने के बाद उसी की निशानदेही पर साहिल और अली की गिरफ्तारी की गई थी। सोमवार दोपहर जेपी अस्पताल में मेडिकल परीक्षण के दौरान आरोपियों पर हमला करने की कोशिश हुई। संस्कृति बचाओ मंच के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी समेत कई हिंदू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने आरोपियों को पीटने की कोशिश की और पुलिस वाहन के आगे नारेबाजी की।

एबीवीपी ने 'लव जिहाद' के खिलाफ निकाली अर्थी

कॉलेज परिसरों में बढ़ती असामाजिक गतिविधियों, लव जिहाद और धर्मांतरण की घटनाओं को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) भोपाल महानगर ने सोमवार को विरोध प्रदर्शन किया था। इस दौरान परिषद कार्यकर्ताओं ने प्रतीकात्मक रूप से 'लव जिहादियों' की अर्थी निकाली और जिला कलेक्टर को एक ज्ञापन सौंपा। एबीवीपी ने छात्राओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने और शिक्षा के पवित्र माहौल को बनाए रखने के लिए प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग की।

बच्चों के भविष्य के लिए अब नाम पूछना ही पड़ेगा

- पहलगाम में धर्म पूछकर पर्यटकों की हत्या का विरोध

भोपाल। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में धर्म पूछकर भारतीय पर्यटकों की हत्या को लेकर लगातार विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। भोपाल की सड़कों और चौराहों पर विश्व हिन्दू परिषद ने पोस्टर लगाकर अपना आक्रोश व्यक्त किया है। भोपाल के रत्नागिरी चौराहे पर विहिप की ओर से लगवाए गए पोस्टर्स पर लिखा है, आदत डालिए नाम पूछने की... अपने बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिए, नाम तो पूछना ही पड़ेगा। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल द्वारा जाति पूछने को लेकर लगाए गए पोस्टर्स पर महिला कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष विभा पटेल ने कहा- भोपाल में जिस तरह के पोस्टर लगाए गए हैं कहीं न कहीं ये दर्शाता है कि कुछ लोगों की मानसिकता दूषित हो चुकी है। इस तरह के पोस्टर लगाने की जगह हम अपने बच्चों को संस्कार दें तो ज्यादा बेहतर होगा। आज इस बात की आवश्यकता है कि आतंकवाद के खिलाफ हम सब खड़े हों। हमारी विचारधारा कोई भी हो, कोई भी राजनैतिक दल हो, आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता से लड़ना ही हमारा दायित्व है।

संपादकीय

कोर्नी की जीत और भारत

कनाडा संसदीय चुनाव में लिबरल पार्टी का सबसे बड़ी पार्टी के रूप उभरना और खालिस्तान समर्थक जगमीत सिंह और उनकी पार्टी न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी की करारी हार का भारत के संदर्भ में बहुत महत्व है। संदेश साफ है कि कनाडा के भारतवंशियों ने सिखों और हिंदुओं के बीच विभाजन रेखा को गहरी और कटु करने वाली राजनीति को साफ नकार दिया है। जबकि लिबरल पार्टी प्रधानमंत्री मार्क कोर्नी के नेतृत्व में 169 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी है। हालांकि वह 343 की संसद में पूर्ण बहुमत से केवल तीन सीटें पीछे रह गई। लिहाजा कनाडा में इस बार भी गठबंधन सरकार ही बनी है। कोर्नी किस पार्टी का समर्थन लेते हैं, यह देखने की बात है। हालांकि उनकी मुख्य प्रतिद्वंदी कंजरवेटिव पार्टी का प्रदर्शन भी बहुत खराब नहीं रहा है। उसने 122 सीटें जीती हैं। तीसरे नंबर पर ब्लॉक क्यूबेक (बीक्यू) पार्टी रही है, जिसे 22 सीटों पर जीत मिली है। चौथे पर नंबर जगमीत सिंह की न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी है, जिसे मात्र 7 सीटों पर संतोष करना पड़ा है। जबकि इस पार्टी ने सभी 343 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। पिछली बार लिबरल पार्टी ने एनडीपी की मदद से सरकार बनाई थी। इस पार्टी में खालिस्तान समर्थक भरे पड़े थे, जिन्होंने कनाडा में भारतीय समुदाय में खाई पैदा करने का निकृष्ट काम किया और यह अभी भी जारी है। पिछली सरकार के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने खालिस्तान समर्थकों के आगे हथियार डाल दिए थे और कनाडा को खालिस्तानियों का अड्डा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन्होंने देश में खालिस्तानी आतंकी की हत्या के लिए भारतीय एजेंसियों और कर्मचारियों को जिम्मेदार बताने की बचकानी हरकतें भी कीं। जिसकी वजह भारत और कनाडा के बरसों पुराने रिश्ते बिगड़ गए। जब पानी सर से निकलने लगा तक लिबरल पार्टी ने चुनाव के पहले देश की कमान मार्क कोर्नी के हाथों में सौंपी। जिसका सकारात्मक नतीजा सामने है। ट्रूडो के मुकाबले कोर्नी एक गंभीर और समझदार नेता लगते हैं। वो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ट ट्रंप की धमकी की आगे नहीं झुके। ट्रंप ने कनाडा को अजीब ऑफर दिया था कि वो कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनाना चाहते हैं। यही नहीं ट्रंप ने अपने पड़ोसी देश कनाडा पर मनमाना टैरिफ भी लाद दिया। जिसका कनाडा की कोर्नी सरकार ने करारा जवाब दिया। इससे जनता में कोर्नी की लोकप्रियता बढ़ गई और माना गया कि वो मजबूत नेता है। साफ है कि कोर्नी किसी के आगे झुकने वाले नहीं हैं। मार्क कोर्नी ने चुनाव में महंगाई घटाने, गरीबों के लिए दोगुने किफायती घर बनाने, कम आय वाले लोगों पर टैक्स का बोझ कम करने जैसे वादे किए थे। पेशे से बैंकर रहे कोर्नी ने कहा था कि वो कनाडा को ऊर्जा के क्षेत्र में सुपर पावर बनाने व देश का रक्षा बजट भी बढ़ाना चाहते हैं। कोर्नी की जीत पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें बधाई देते हुए दोनो देशों के बीच सम्बंध पूर्ववत होने की आशा जताई है। कनाडा भारत के लिए भारत कनाडा के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है। हर साल हजारों भारतीय छात्र अध्ययन के लिए कनाडा जाते हैं। दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्ते भी हैं। बीते दो साल का समय छोड़ दें तो भारत कनाडा रिश्ते मधुर ही रहे हैं। आज कनाडा में लाखों भारतीय रहते हैं। इस बार चुनाव में 22 भारतवंशियों की जीत कनाडा में भारतीयों के महत्व को रेखांकित करती है। इन चुनाव नतीजों से साबित किया कि कनाडावासी भारतवंशी अलगाव और हिंसा की प्रवृत्तियों के खिलाफ हैं। नए पीएम कोर्नी से उम्मीद है कि वो कनाडा के साथ भारत के रिश्तों को पहले की तरह सौहार्दपूर्ण बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे।

नजरिया

सुधीर मोता

लेखक साहित्यकार हैं।

हमें हम से ही बचाने वाली इम्युनिटी दे दो

खरोंच लगने पर खून का थक्का बन जाता है। जैसे एक दुर्ग। गले में टांसिल दिये गये हैं। बलगम कीटाणुओं को लपेट कर बाहर फेंक देता है। प्रकृति ने हमारे मन और मस्तिष्क के साथ भी यह किया है। अच्छे और विपरीत समय में संतुलन की सीमा में रहना। क्रोध या प्रतिक्रिया के समय अपने आप को हद से बाहर न जाने देना आदि। प्रकृति ने हमारी सीखने और कुछ न कुछ नया बनाने की क्षमता देखते हुए और जीवों पर राज करने की छूट दे दी पर कुछ शर्तों के साथ।

एक फिल्म देखने बैठो तो तो संग-संग दूसरी चलती हैं। दो-एक नहीं कई। रघु पलट-पुष्पा पलट की पुस्तक द केस देट शूक द अंपायर पर आधारित नई फिल्म केसरी चेप्टर 2 देखते समय यही हुआ। पुस्तक के लेखक द्वय फिल्म के वास्तविक नायक शंकरन नायर के पड़पोते-बहू है। शेष दुनिया को कभी नहीं सूझी कि इस अब तक दबे पड़े सच को बाहर लाया जाये, जबकि वे 1897 के अमरावती अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये थे। यह और उनके कई योगदान फिल्म में शायद इसलिये नहीं बताये गये कि फिल्म में समय और विषय की सीमायें होती हैं। 1930 में वे राजनैतिक सक्रियता छोड़ चुके थे। जलियांवाला बाग सहित हमारा पूरा स्वतंत्रता संग्राम साधारण नागरिकों के साथ साथ कविता, पत्रकारिता, चित्रकला, वकालत आदि के उपासकों के साहस और बलिदानों की कथाओं से भरा पड़ा है। पहले भी कह चुका,जीवन प्रारंभ से अंत तक संयोगों की कहानी है। सो अमृतसर के जलियां वाला बाग हो कर आए अभी मुझे दो महीने भी नहीं हुए और सामने थी ये फिल्म, परदे पर उस भयावह नृशंसता और उसके बाद का पूरा सच ले कर। हालांकि फिल्म के अंत और नायक द्वारा प्रयुक्त कुछ शब्दों में फेरबदल है। फिल्म के अंत उपरांत जलियांवाला बाग के शहीदों के नामों की सूची पर्दे पर चलती है, रूक कर उसे पढ़ियेगा तो मरने वालों के अलग अलग धर्मों का पता चल जायेगा।

अंग्रेज़ों की चिंता के मूल में डिवाइड एंड रूल के अपने मूल मंत्र के ध्वस्त होने का डर तीन दिन पूर्व याने 10 अप्रैल 2019, रामनवमी पर निकले जुलूस से उपजा था जिसमें हर धर्म के लोग शामिल थे और जिसके मूल में एडवोकेट सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल नामक नेताओं की गिरफ्तारी के प्रति बढ़ता रोष था। ये पंक्तियां लिखते लिखते मैं ब्रिटेन में जन्मी पत्नी अनीता आनंद लिखित अंग्रेज़ी पुस्तक -द पेशेंट असेसिन (धैर्यवान वधिक) द ट्रू स्टोरी ऑफ मेसाकर, रिवेंज एंड इंडियाज़ क्वेस्ट फॉर इंडिपेंडेंस के पन्ने पलट गया -दलित वर्ग के दो बच्चे पहले अपनी माता और फिर पिता की मृत्यु के बाद खालसा अनाथालय में पले। वहां साधु और शेरसिंह नाम के इन बच्चों को नये नाम दिये गये मुक्ता और उधमसिंह। जलियांवाला बाग में गोलीबारी का आदेश देने वाले थे रेगिनाल्ड डायर और उस समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे माइकेल डायर। इनमें से माइकल डायर को 21 साल के धैर्य और प्रयासों के बाद उधमसिंह ने 1940 में लंदन जा कर मौत के घाट उतारा। वैसे यह सब इस फिल्म में नहीं है इसके लिये तो उधम सिंह पर बनी अन्य फिल्म हमें देखनी होगी या किताबें पढ़नी होंगी। केसरी फिल्म उस न्यायिक संघर्ष की कथा कहती है जो न किया गया होता तो सच सामने नहीं आता।

देश की आज़ादी के लिये कितना रक्त बहा यह हम सब महसूस तो कर सकते हैं पर अब उस तरह नहीं। समय बीतते बीतते हम अपने निजी संघर्ष तक भूलने लगते हैं तो पुरखों ने जो किया उसके बारे में स्मृति लोप होता जाये तो क्या अचरज। मैं फिल्म देखते समय विभाजन समय की बातें सोच रहा था जो अमृतसर के पार्टीशन म्यूजियम में देख आया। स्वाभाविक रूप से अटारी बार्डर की उसी दिन देखी परेड भी याद आई। संग-संग हाल ही में कश्मीर में बीती क्रूर घटना याद हो आई। घटना अभी अभी की है इसलिये और भी

गहराई से दिलो दिमाग पर चस्पा है। साम्राज्यवाद और विस्तारवाद ने सबसे अधिक कहर ढाया मानवता पर। हम भी तो धर्म और धर्मग्रंथों की कथित अस्मिता के लिये लड़ मरते हैं उन पवित्र पुस्तकों के भीतर जो है उसके लिये अपने आप तक से नहीं लड़ सकते। कश्मीर की घटना, सुरक्षा और कड़ी होती तो शायद ना होती, यह सच है, पर कब तक हम बंदूक के साये में इबादत उपासना त्यौहार पर्यटन मन-रंजन करने को मजबूर रहेंगे। कब तक हम इस भय में जियेंगे कि कभी भी मारे जा सकते हैं?

यह सब कब से होता आ रहा है। संवत, सन्, हिजरी, बीसी, एडी, 1560, 1947, 1971, 1962, 1965, 1984,1990, ... हम सब कुछ याद कर लिख सकें यह संभव नहीं। इसमें खोया तो बहुत कुछ गया पर पाया उन्होंने भी कुछ नहीं जिनके पास हथियार थे। जमीन के लिये, हवस के लिये, भाषा के लिये, धर्म के लिये कितना कुछ हुआ। सब से ऊपर हो सकने की भविष्य के गर्त में दबी किसी संभावित चाह के लिये वर्तमान के गलीज भयग्रस्त कूड़े करकट में जी रहे हैं। कौन-सी पीढ़ी को कब जा कर सुखी, शांत, निश्चिंत साम्राज्य मिल भी सकेगा? किसी को नहीं पता।

प्रकृति जिसे हम अपने अपने धर्म पंथ संप्रदाय के अंतर्गत अलग अलग तरह से संबोधित करते हैं जो कि वास्तव में तो हमारी मातृभाषा या अपनाई गई भाषा के कारण अलग अलग नाम है, ने हमें भरपूर सुरक्षा दे कर भेजा है। विज्ञान इसे रोग प्रतिरोधक क्षमता कहता है। खरोंच लगने पर खून का थक्का बन जाता है। जैसे एक दुर्ग। गले में टांसिल दिये गये हैं। बलगम कीटाणुओं को लपेट कर बाहर फेंक देता है। प्रकृति ने हमारे मन और मस्तिष्क के साथ भी यह किया है। अच्छे और विपरीत समय में संतुलन की सीमा में रहना। क्रोध या प्रतिक्रिया के समय अपने आप को हद से बाहर न जाने देना आदि। प्रकृति ने हमारी सीखने और कुछ न कुछ नया बनाने की क्षमता देखते हुए और जीवों पर राज करने की छूट दे दी पर कुछ शर्तों के साथ। हम आज ए आई तक आन पहुंचे हैं तो जैसे केलकुलेटर के कारण स्वतः जोड़ घटाना भूल चुके वैसे ही प्रकृति हम से एवज में कुछ छीन लेने वाली है।

हमने प्रकृति को अपनी भाषा की स्थानीयता या गुरूओं, उस्तादों के बताये अनुसार अलग अलग भाषा में पुकारना तो सीख लिया पर प्रकृति या ईश्वर नामक नियंता को अपने काम में हजारों साल लगते हैं तब हम तुम जैसा दो पैरों पर चलने और दो हाथों से नये नये आविष्कार कर सकने वाला नमूना तैयार होता है। उधर उस के काम में हम तुम ही कितना खलल, व्यवधान डालते हैं। प्रकृति कहती है -तुमने हथियार, दवायें, दुर्ग बना लिये। अब तुम जानो तुम्हारा काम।

मुझे प्रकृति या जिस भी नाम से जिसे हम-आप अपने गले लगाये रखने का भ्रम रखते हैं, से बहुत शिकायत है। क्यों हमारे भीतर ऐसी प्रतिरोध प्रणाली विकसित नहीं की जिससे हम जीवन के निज का आनंद ले सकने से भटकाते अपने भीतर और आसपास के रोगों को परास्त कर सकें। मेरी शिकायत पर, मुझे पता है उसका जवाब क्या होगा। वह कहेगी तुम्हारे भीतर कामनाओं की नदी इसलिये विकसित होने दी कि तुम्हें भटकना ना पड़े, इसलिये नहीं कि तुम इतने पिपासु होते जाओ कि मुझे ही विस्थापित कर स्वयं को ही सब कुछ मानने लगो। मुझे उसके इस उत्तर पर एक और प्रश्न सूझ आयेगा जिस के लिये शर्मिंदा हूं पर क्या करूं। हम कई बार माता पिता से भी तो ऐसे सवाल पूछ लेते हैं उनकी मजबूरी और सीमायें जाने बिना। मैं पूछूंगा। हमारे भीतर घुस आते विस्तारवाद और अतार्किता को रोक सकने की सुरक्षा क्यों नहीं बनाई ? हमें सुंदरता देख उसे किसी भी हद तक जा कर हड़पने की कामनायें रूकें ऐसी सुरक्षा क्यों नहीं दी ? हमें अपने घर के बाद गांव नगर देश जंगल दुनिया सब कुछ जीतने की हवस से लड़ने की क्षमता क्यों नहीं दी ? यह देह की चाहतें मन की और मन की पिपासायें देह की होते हुए हमें ही क्यों हरा देती हैं ? मुझे आपसे शिकायत है आपसे बहुत बड़ा सिक्युरिटी लेप्स हुआ है। बड़ी सुरक्षा चूक हुई है आपसे। शायद हम कैंसर जैसे रोग को जीत लें, पर उसे देह में आने से रोक लें यह मुश्किल लगता है क्योंकि उधर हमारा ध्यान नहीं है। यह सब कुछ वैसा ही लग रहा।

कैसे लोग हैं हम ! प्रकृति में बिखरी सुंदरता का आनंद लेने के लिये पैसा खर्चते हैं, यात्रायें करते हैं, हमारी सुरक्षा की जवाबदेही निभाती उसमें कई बार चूकती भी सेनायें, सत्तायें हैं। जिसे इसी स्वर्ग में रहने का वरदान मिला हुआ वह खच्चर हांकता और पिठ्ठू बन कर बोझा ढोता फिर रहा। उसकी निर्धनता, लालच, नादानी, या अल्पज्ञता उसे आसानी से हांका जाने वाला मोहरा बना देती है। उसके पास प्रकृति की गोद, पुरखों के रचे अनूठे वाद्य, लोकगीत, संगीत, नृत्य, भाषायें इतना सब कुछ तो है। पर अब उसकी अपनी जवानी और बच्चों का बचपन यौवन ऐसे इंतजार में ही बीत जाने वाला है जिसके पूरा होने की कोई संभावना हो भी तो कब किस पीढ़ी को उसका कथित लाभ मिलेगा पता नही।

हे प्रभु, मां, पिता, प्रभु, गॉड, ईश्वर, रब, खुदा, गुरू, उस्ताद आप को किसी नाम से भी बुला लें हम, आप ने ही हमें समझने में भूल की है। हमसे जो शक्ति छीनना है छीन लो हमें हम से ही जो बचा सके वह इम्युनिटी दे दो। सिक्युरिटी लेप्स आप से हुआ है। आप रूलर हो स्कूल में छड़ी या रूलर ले कर डराने या पीटने जैसा कुछ भी करो। हम से नहीं होगा, आप कर सको तो करो। जलियांवाला बाग हो या कश्मीर की वादियां इन जैसी सारी जगहों और दुनिया भर में बंदूक की लिबलिबी दबाने और उन्हें कंट्रोल करने वाले आकाओं को कंट्रोल करो। हमें अपने आप से सुरक्षा ना दे सको तो बुद्धि विवेक ही दे दो, उन्हें भी, हमें भी।

सामयिक सिने विमर्श

विनोद नागर

लेखक फिल्म अध्येता एवं सिने समीक्षक हैं।

आईएस जौहर ने भी कहा था कश्मीर न देंगे, हमारा है

पहलगाम में पर्यटकों के नर संहार की त्रासद घटना के बाद से कश्मीर लगातार सुर्खियों में बना हुआ है। बैसरन की खूबसूरत वादियों में फिल्माये गये अनगिनत फ़िल्मों के गीत आज भी दर्शकों के मानस पटल पर छाये हुए हैं। इस मनोरम घाटी के रोमांटिक माहौल को देखते ही देखते बन्दूक की गोलियों से एक्शन फ़िल्म में बदल देने की रियल शूटिंग ने पूरी दुनिया का दिल दहला दिया है। आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछकर जिस बेरहमी से उन्हें गोलियों से भून डाला, वह 'शोले' जैसी कालजयी एक्शन फ़िल्म में गब्बर द्वारा ठाकुर के पूरे परिवार को गोली से उड़ा देने वाले लोमहर्षक सीक्वेंस से भी अधिक मर्मान्तक घटनाक्रम है, जो किसी फ़िल्म की स्क्रिप्ट का हिस्सा नहीं बल्कि मानवता के इतिहास पर लिखी दरिंदगी के रक्त रंजित छींटों की क्रूर दास्तान है।

भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा में शुरुआती रंगीन फ़िल्मों का एक दौर ऐसा भी आया जब आउट डोर शूटिंग के लिये कश्मीर निर्माता-निर्देशकों और सितारों की पहली पसंद बना रहा। कश्मीर की हसीन वादियों में फिल्माये गये असंख्य गानों का फ़िल्मों की बॉक्स ऑफिस सफलता में अहम योगदान रहा। आज छह-सात दशक बाद भी कश्मीर में फिल्मांकित वे तमाम गीत दर्शकों को खूब लुभाते हैं। गोया की धरती का स्वर्ग और भारत का मुकुट कहे जाने वाला कश्मीर कभी भारतीय फ़िल्मों का अनिवार्य अंग रहा है। यहाँ तक कि जाने माने हास्य कलाकार इंद्रसेन जौहर ने भी फ़िल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम रखने के एक दशक बाद 'जौहर इन कश्मीर' (1966) नामक फ़िल्म बनाई थी। इस फ़िल्म का एक गीत इन दिनों सोशल मीडिया पर तेज़ी से वायरल हो रहा है। 'जन्नत की है तस्वीर, ये तस्वीर न देंगे.. हाथों में किसी ग़ैर के तक़दीर न देंगे.. कश्मीर है भारत का, कश्मीर न देंगे..' नामक इस गीत में कश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बताते हुए इसकी महिमा का गुणगान किया गया है। मोहम्मद रफ़ी के गाये इस गीत को इंदीवर ने लिखा था और कल्याणजी आनंदजी ने इसे संगीत से सँवारा था। इसी फ़िल्म में मोहम्मद रफ़ी का गाया एक अन्य गीत- 'बेगुनाहों का लहू है.. रंग लाएगा..' भी उन दिनों लोगों के दिल को छूने में कामयाब रहा था।

पहलगाम नर संहार के बाद उमड़ी जन भावनाओं के ज्वार में कई लोग इस गीत को पाकिस्तान के दबाव में तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा प्रतिबंधित किये जाने का मुद्दा उछाल रहे हैं। जबकि हकीकत यह है कि न तो फ़िल्म के प्रदर्शन पर रोक लगाई गई थी और न ही गाने के प्रसारण पर बंदिश लगी थी। हाँ, फ़िल्म सेंसर बोर्ड ने ज़रूर इस गीत के कुछ बोलों पर आपत्ति ली थी, जिन्हें बाद में बदल दिया गया था।

हालाँकि आई.एस. जौहर की यह ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्म न तो बॉक्स ऑफिस पर कोई कमाल दिखा पाई थी और न ही इसके गाने रेडियो पर 'जौहर महमूद इन गोवा' (1965) के गीत 'ये दो दीवाने मिलके चले हैं दूल्हा बनके..' की तरह लोकप्रिय हुए थे। मगर पहलगाम त्रासदी के बाद उफन रही भावनात्मक हिलोर के बीच 'जौहर इन कश्मीर' फ़िल्म के इन गीतों को ढूँढकर सुनने से लोग खुद को रोक नहीं पा रहे हैं। आखिर कश्मीर से हर भारतीय स्वयं को देश के नक़्शे पर मस्तक की भाँति कनेक्ट जो करता आ रहा है अपने बचपन से! अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र में डबल एम.ए. तथा एल.एल.बी. पास आई.एस. जौहर फ़िल्म इंडस्ट्री के सुशिक्षित लोगों में से एक थे, लेकिन प्रायः उनके हुनर का मूल्यांकन हास्य कलाकार के बतौर ही हुआ। निजी जीवन में चार बार पत्नी से तलाक लेकर पाँच शादियाँ करने वाले जौहर ने 'फाइव राइफ़ल्स' और 'नसबंदी' जैसी अलबेली फ़िल्में बनाने के पहले 1971 में भारत-पाक युद्ध के फौरन बाद 'जय बंगला देश' जैसी फिल्म रिकॉर्ड समय में बनाकर रिलीज कर दी थी। सत्तर के दशक में रेडियो सीलोन पर उनका कार्यक्रम 'जौहर के जवाब' भी काफ़ी लोकप्रिय हुआ था जिसमें वे श्रोताओं द्वारा पूछे गये सवालों के जवाब अपने ख़ास मज़ाकिया अंदाज़ में देते थे। निर्माता-निर्देशक के रूप में उन्हें सर्वाधिक यश 'हम सब चोर हैं' (1956) और 'जौहर महमूद इन गोवा' (1965) से मिला। 'जौहर महमूद इन गोवा' (1965) उन्होंने गोवा को पुर्तगाली औपनिवेश से आज़ादी दिलाने की पृष्ठभूमि में बनाई थी। जबकि इस श्रृंखला की अगली फ़िल्मों- 'जौहर इन कश्मीर' (1966) 'जौहर इन बॉम्बे' (1967) 'जौहर महमूद इन हांगकांग' (1971) को आशातीत सफलता नहीं मिली। अपने पैंतीस साल के कैरियर में इन्द्रसेन जौहर ने डेढ़ सौ से अधिक फ़िल्मों में काम किया और एक दर्जन फ़िल्में निर्देशित की। 'हम सब चोर हैं' (1956) में तो उन्होंने 9 अलग-अलग किरदार निभाये थे। हास्य अभिनेता के रूप में 'जॉनी मेरा नाम' (1970) में निभाई पहलाराम, दूजाराम और तीजाराम की तिहरी भूमिकाओं में उन्हें आज भी चाव से देखा जाता है।

विडम्बना देखिये कि साठ साल पहले एक हास्य कलाकार ने अपनी एक साधारण फ़िल्म में देशभक्ति के वो तराने रुपहले परदे पर शिद्दत से पेश कर दिये थे, जिनकी प्रासंगिकता आज पहले से कहीं अधिक पुरज़ोर महसूस हो रही है। सिनेमा केवल 'लार्जर देन लाइफ' इमेज ही नहीं उकेरता है बल्कि वह अपने शाश्वत होने का एहसास भी कराता है। कैमरे से झाँकती फिल्मकार इंद्रसेन जौहर की दूरदृष्टि को नमन; जिसने हँसी ठट्ठे के बीच गंभीर बात कहने के जौहर भी दिखाये। भारत में सिनेमा के सामाजिक सरोकार हर दौर में मुखर रहे हैं, आपको याद हों के न हों।

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

क्या कश्मीर में हमारा कोई अपना नहीं मरा?

आज जिस भी न्यूज़ चैनल, अखबार या किसी से बात करें, तो सब कश्मीर में हुई आतंकी घटना के बारे में बात करते है। पर मुझे समझ में नहीं आ रहा कि क्यों दुखी है? उस घटना में कौन सा हमारा कोई अपना मरा है। ना ही हमारे घर से कोई फ़ौज में है। तो दुःख किस बात का कर रहे है।

फेसबुक पर लोग इस आतंकी घटना के खिलाफ अपने-अपने तरीके से खंडन कर रहे है। कुछ लोग पाकिस्तान को गरिया रहे है। पर क्यों? बेचारे आतंकवादियों ने और पाकिस्तान ऐसा क्या ही कर दिया है। एक तो तुम्हें कलमा नहीं आता ऊपर से गलत भी आतंकियों को ही कह रहे हो। शायद भारत के लोग भूल गए है कि उन्हें बचपन से ही मजहब नहीं सीखाता, आपस में बैर रखना सीखाया गया है। लेकिन ऐसी कोई भी बात उनकी कौम को नहीं सिखाई गई। तो क्यों अपने महान पूर्वजो की बात नहीं मानी। वह तो मान रहे है। उनको कहा गया है कि काफिरों को मारो, तो वह मार रहे है। गलत क्या कर रहे है? कश्मीर में विधवा हुई एक लडकी के दर्द और अनाथ हुए कुछ बच्चों के बारे में सोचने से ज़्यादा हमें सीमा हैदर के बारे में सोचना पड़ रहा है, तो गलत कौन है?

जब इतने बड़े हादसे पर जवाब नहीं दे पा रहे तो कुछ लोकल कश्मीरियों के साथ वीडियो बना रहे है कि हम तो अब इनके साथ सुरक्षित महसूस कर रहे है। सवाल यह है कि बिना लोकल मदद के आतंकी इतनी बड़ी वारदात को कैसे अंजाम तक पहुंचा सकते है? हमारा ऐसा ब्रेन-वाश हमेशा से किया जाता रहा है। किसने कहा कि कश्मीर में ही सबसे अच्छा ड्राई-फ्रूट होता है? हम भी समझ गए कि होता ही होगा। लेकिन इसके पीछे के कारण को कोई नहीं जान पाया। कश्मीर की इकोनमी को बढाने के लिए ऐसे फाल्स नेरेटिव बनाए जाते है। लेकिन दोष किसी और को देने से पहले क्या हमने कभी अपने दिमाग का इस्तेमाल किया है? हम क्यों किसी और के बनाए रास्ते को ही सही मानते है? कुछ,लोग अब इसी लेख को पढ़कर कहेंगे कि सब मुसलमान बुरे नहीं होते। मैं भी मानती हूँ कि सब बुरे नहीं होते, लेकिन जो बुरे है उनको तो बुरा बोलना ही चाहिए। कब तक बंद कमरों में बैठ कर अपनी बात कहते रहेंगे। माहौल सिर्फ वह ही नहीं खराब कर रहे जो आतंक फैला रहे है। उनसे अधिक वह लोग माहौल खराब कर रहे है जो इस हमले पर उलटा सरकार से ही प्रश्न पूछकर इस घटना को दूसरा ही रुख देने की कोशिश कर रहे है। आज हमारे देश का हाल इतना दयनीय हो चुका है कि मोदी जी का विरोध करते-करते हम देश का ही विरोध करने लग गए है। हम यह भूल गए है कि आज मोदी जी प्रधानमंत्री है तो कल कोई और होगा, पर देश तो आज भी ही हमारा है और कल भी हमारा ही रहेगा। हमारी पहचान भारतीय होने से ही है। अगर 20-22 साल बाद इस घटना पर कोई फिल्म बनेगी तब भी इसे प्रोपोगेन्डा कहा जाएगा। मानसिक रूप से कभी तैयार ही नहीं हो रहे कि यह किसी एक प्रदेश, शहर या कस्बे की घटना नहीं है, यह हमारे भीतर की कमजोरी को उजागर करती घटनाएं है। यह एक विकृत मानसिकता से उपजी घटनाएं है।

अभी भी कुछ लोग चुप्पी साधेंगे, कि कहीं हमारे साथ काम करने वाले को कुछ बुरा ना लग जाए। लेकिन एक सच्चे भारतीय को गलत को गलत कहने में कभी हिचकिचाहट नहीं होगी, फिर वह चाहे किसी भी धर्म से सम्बन्धित क्यों न हो। ऐसा नहीं है कि इस घटना को मुस्लिम बुरा नहीं कह रहे, लेकिन उनकी संख्या कम है।इससे ज़्यादा संख्या तो सेकूलर हिन्दुओं की है इस घटना पर प्रश्न करने वाले अधिक है। यही उन आतंकियों की ताकत है। मैं अभी भी यही कहूंगी हम सब आँख बंद कर लेते है, फिर न तो कुछ दिखेगा और ना ही बुरा लगेगा। फिर अखबार उठाएंगे और सरकार को गालियाँ देकर अपना फर्ज़ निभा देंगे और शुक्र करेंगे कि अगला हमला फिर से हमारे किसी अपने पर नहीं हुआ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. अतुल चतुर्वेदी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

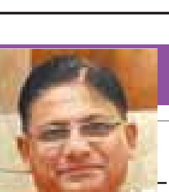

न्यू इंडिया में भ्रष्टाचार तो अंग है शिष्टाचार का

कल फिर वो शिष्टाचार भेंट को गए थे। बस हलचलें तेज हो गयीं। ब्रेकिंग न्यूज की पट्टियां चलने लगीं। हाईकमान के हाथ-पैर और कान क्या वे स्वयं सीट छोड़ खड़े हो गए। राजनीति में शिष्टाचार भेंट प्रायः नए समीकरण, नए साइक्लोन की जन्मदात्री होती है। इसी के नाम पर वहां षड्यंत्र के अचार सहकार की भावना और सौदेबाजी के मसालों के साथ डाले जाते हैं। वरना शिष्टाचार का राजनीति में भला क्या काम बचा है इन दिनों। जब कीचड़ से चेहरे रंगने की परस्पर प्रतियोगिता चल रही हो, कमर के नीचे वार का फैशन हो, चरित्र हनन आचार संहिता का अनिवार्य अंग हो तो शिष्ट होने की संभावना ही खल्लास हो जाती है दूर दूर तक। समूची लड़ाई यहां तो अपशिष्ट होने से बचने और सत्ता पर काबिज हो कर विशिष्ट होने की है। ये भेंट कम, डील ज्यादा है। वैचारिक सामंजस्य कम, मजबूरी की दोस्ती अधिक है। इन गुनाहों को व्यर्थ प्यार का नाम न दो। तुम्हारी गहरी, कुटिल और टेढ़ी मुस्कानें बहुत कुछ बयां करती हैं वत्स। तुम्हारे दृष्टकूट पदों से वक्तव्यों की व्याख्या से चैनल चहक रहे हैं। वहां बाजार में आज अच्छी रौनक है। अखबारों की मृत शिराओं में नव जीवन का संचार सा हो गया है। मानों अपच और अजीर्ण के रोगी ने पुनर्नवा मंडूर का सेवन कर लिया हो। अहा, एक भेंट कितना कुछ देती है...। चहुं दिश जीवन हरा-भरा कर देती है। आज पंत होते तो ऐसा ही कुछ लिखते। शिष्टाचार का भेंट से उतना ही गहरा रिश्ता है जितना शिक्षा का नवाचार से।

जबकि एक ठेकेदार की अधिकारी से भेंट सदा संक्षिप्त, रसपूर्ण और अर्थपूर्ण होती है। उसके दूरगामी निहितार्थ होते हैं। जजमान के मन में भी उसको लेकर एक कौतूहल भाव विद्यमान रहता है। वो क्या है सर, इधर से गुजर रहा था ...कल पुरी से लौटा तो सोचा प्रसाद देता चलूं। प्रसाद के नाम पर चार डिब्बे मिठाई के और एक विशेष डिब्बा स्नेह भाव से विनम्रता का रैपर उढ़ा कर धीरे से मेज पर सरका देता है साहब के पास। साहब ने कोई कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं। खूब समझते हैं इतना प्रसाद तो लाइन में लगकर इक्कीस सौ रूपए की रसीद कटवाने पर भी नहीं मिलता लेकिन वो भोले बने रहते हैं। विशेष डिब्बे को कनखियों से बार-बार निहारते हुए। उनके मन में तमाम प्रश्न उठते रहते हैं। पता नहीं कितने होंगे ? कहीं कम तो नहीं लाया ससुरा ...? एक तो बिल ज्यादा का पास करा ले और कमीशन से कम का हिस्सा यहां लाया हो प्रसाद के बहाने ...। ऐसे तमाम ऊल जलूल प्रश्न उनके मस्तिष्क में आ रहे हैं। साहब धर्म संकट में हैं। ऊपरी खीं, खीं चल रही है। दांव ढूंढे जा रहे हैं बात को पटरी पर लाने के। संवाद के पुल तलाशे जा रहा हैं, कैसे शुरू करें प्रसंग।

हिम्मत कर के ठेकेदार पहला ओवर डालता है। सुनते हैं सर जी, इस वीक आपने सारी पेंडिंग क्लीयर कर दी...? हां भाई, काम तो करना ही है फिर लटकाने से क्या फायदा...। जिनके ड्यूज क्लियर हो चुके थे उनके भुगतान रोक कर परेशान क्यों करें ...(साहब थोड़ा खुले) तुम तो जानते हो मैं जुबान का पक्का हूं। - तो सर कल चैक ले जाऊं। - नहीं तुम्हारा तो वो जी एस टी वाला चक्कर था न। शायद तुम्हारा ही रूका हुआ था बिल। कोई बात नहीं सर हो जाएगा क्लियर ...आप का सिर पर हाथ है न और वो विशेष डिब्बा उठाकर साहब के कर कमलों में थमा देता है। साहब आशय समझ गए हैं। ठीक है फिर, चिंता न करो कल पहुंचते ही कर दूंगा। एक ठहाका हवा में तैरता है। प्रसाद के डिब्बे आपस में बड़बड़ाते हैं सास्ला नाम हमारा और काम दो नंबर का। निकल बाहर नुक्कड़ के मोड़ पर खड़े सांड से तेरी कमर की हड्डी न तुड़वायी तो। उधर शिष्टाचार कोने में सहमा सा खड़ा है। आज बंशीधर होते तो नमक के दारोगा के पद का ख्याल न रख सीधे गिरेबां पकड़ लेते ठेकेदार का। घूस देने की कोशिश करता है लेकिन ये न्यू इंडिया है यहां इन सब से परहेज कैसा ये तो अंग है शिष्टाचार का। यहां अनगिन रहस्य हैं इस के पीछे। जिनको समझना और जिनकी व्याख्या सूत जी महाराज के वश की भी बात नहीं है।

श्रम दिवस विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

'मजदूरों की स्थिति में सुधार की बाट जोहता समय'

पूंजीपति वर्ग मुनाफ़े की दर को गिरने से रोकने के लिए मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों का इस्तेमाल करता है जिसके परिणाम स्वरूप बेरोजगारों की एक 'रिज़र्व फ़ौज' तैयार कर देता है जिससे समाज में असंतोष पनपता है। मार्क्स के अनुसार मजदूरों का शोषण पूंजीवाद का मुख्य लक्षण है। मजदूरों के शोषण के विचार के पीछे मर्क्स की मूल्य संबंधी धारणा थी जिसके आधार में रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित 'मूल्य का श्रम सिद्धांत' था। रिकॉर्डो की तरह ही मार्क्स का मानना था कि किसी भी वस्तु का मूल्य उसे उत्पादित करने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष श्रम के आधार पर आंका जाना चाहिए। मार्क्स ने अपने मूल्य सिद्धांत को रिकॉर्डो से इतर ले जाते हुए उन्होंने 'कैपिटल' के पहले भाग में कहा कि किसी जिंस या वस्तु का उपयोग-मूल्य उसके भौतिक गुणों पर निर्भर होता है

मजदूरों को संगठित करने और उनमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना का संचार मार्क्स से लेकर गांधी तक सभी ने किया है। सभी ने अलग अलग तरीके से मजदूरों के साथ हो रहे शोषण को उजागर किया तथा शोषण को रोकने के लिए प्रयास किए है। कार्ल मार्क्स का मानना था कि पूंजीपति वर्ग अपने निजी स्वार्थ में ऐसी किसी भी नीति को बनने नहीं देंगे जो मजदूरों के जीवन स्तर को बेहतरी की ओर ले जा सकती हो। पूंजीवाद के अंतर्विरोधों के बारे में मार्क्स का विचार था कि पूंजीपति वर्ग आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण उत्तरोत्तर धन संपत्ति बढ़ाते जाने के लिए अभिशप्त हैं। वे एक दूसरे को दबाव में रखते हैं। उनकी आर्थिक हैसियत या तो बढ़ती है या घटती है। यथास्थिति कभी कायम करने की कोशिश उनकी प्रतिष्ठा और सत्ता का अंत कर देती है। पूंजीवाद लगातार इजारेदारी और आर्थिक संकेंद्रण की तरफ जाता है। मार्क्स ने पूंजीवादी प्रणाली के तहत मुनाफ़े में आने वाली गिरावट को एक सामान्य नियम की तरह देखा और साथ में कई तरह की प्रति-प्रतिक्रियाओं की भी शिनाख्त की। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवादी प्रणाली के संकट को प्रमुख संकट और उसके अधीन या उससे निर्देशित होने वाले गौण संकटों के बीच बांट कर देखना चाहिए। पूंजीपति वर्ग मुनाफ़े की दर को गिरने से रोकने के लिए मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों का इस्तेमाल करता है जिसके परिणाम स्वरूप बेरोजगारों की एक 'रिज़र्व फ़ौज' तैयार कर देता है जिससे समाज में असंतोष पनपता है। मार्क्स के अनुसार मजदूरों का शोषण पूंजीवाद का मुख्य लक्षण है। मजदूरों के शोषण के विचार के पीछे मार्क्स की मूल्य संबंधी धारणा थी जिसके आधार में रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित 'मूल्य का श्रम सिद्धांत' था। रिकार्डो की तरह ही मार्क्स का मानना था कि किसी भी वस्तु का मूल्य उसे उत्पादित करने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष श्रम के आधार पर आंका जाना चाहिए। मार्क्स ने अपने मूल्य सिद्धांत को रिकार्डो से इतर ले जाते हुए उन्होंने 'कैपिटल' के पहले भाग में कहा कि किसी जिंस या वस्तु का उपयोग-मूल्य उसके भौतिक गुणों पर निर्भर होता है जिसकी प्राप्ति उस वस्तु के उपभोग की प्रक्रिया में होती है। मार्क्स के अनुसार मूल्य एक तकनीकी संबंध न होकर मनुष्यों के बीच एक सामाजिक संबंध है जो पूंजीवाद के तहत एक खास तरह का भौतिक रूप अख्तियार कर के जिंस के रूप में प्रकट होता है। मूल्य सिर्फ़ एक दिमागी अवधारणा नहीं है,बल्कि पूंजीवादी सामाजिक संबंध उसे भौतिक रूप दे देते हैं। मार्क्स ने अधिशेष मूल्य के सिद्धांत को अधिक परिष्कृत करते हुए श्रम और श्रम-शक्ति के बीच अंतर करके यह दिखाया कि अधिशेष मूल्य केवल मजदूरी खरीदने और बेचने के क्रम में हुई नाइंसाफी का नतीजा नहीं है। अगर श्रम शक्ति उसके सही मूल्य पर बेची जाए तो भी अधिशेष मूल्य उस श्रम द्वारा किये जाने वाले उत्पादन के भीतर पैदा हो जाता है; अर्थात् मजदूर का शोषण व्यक्तिगत धरातल पर मजदूर और मालिक के बीच हुए आदान प्रदान पर निर्भर नहीं होता, बल्कि वह उत्पादन की प्रक्रिया में निहित है। शोषक और शोषित की हैसियत न्यायसंगत विनिमय स्थापित करने से खत्म नहीं हो सकती है। वह तो एक वर्गीय हैसियत है जो इस बात से तय होती है कि उत्पादन के साधनों पर किसका नियंत्रण है। इस नियंत्रण का फैसला केवल वर्गों के बीच संघर्ष से ही हो सकता है। मार्क्स को पूरा यक़ीन था कि वर्ग संघर्ष लाज़मी तौर पर हिंसक और क्रांतिकारी ही होगा। मार्क्स और ऐंगल्स ने 'मैनिफेस्टो ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी' के आखरी पैरा में लिखा है कि 'कम्युनिस्ट अपने विचारों और लक्ष्यों को छिपाने से नफरत करते हैं। वे खुलकर एलान करते हैं कि उनके लक्ष्य केवल सभी मौजूदा सामाजिक स्थितियों को ताकत के दम पर पलट देने से ही पूरे हो सकते हैं। शासक वर्ग अगर कांपते हैं तो उन्हें कम्युनिस्ट क्रांति की संभावनाओं से काँपने दो। सर्वहारा के पास अपनी बेड़ियां के अलावा खोने के लिए कुछ नहीं है। जीतने के लिए उनके सामने दुनिया पड़ी है'। मार्क्स के सामने हिंसक क्रांति के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं था। लेकिन मार्क्स,ऐंगल्स और लेनिन के साहित्य में यदा-कदा शांतिपूर्ण क्रांति का जिक्र भी मिलता है। यानी क्रांति वर्गों के बीच संघर्ष से तो होगी लेकिन कुछ खास परिस्थितियों में उसका चरित्र हिंसक न होकर शांतिपूर्ण भी हो सकता है। वहीं गांधी आर्थिक गतिविधियों को भी नैतिकता से संचालित करने का प्रयास करते हैं। स्वामित्व की प्रेरणा ऐसी होनी चाहिए जो नैतिकता की ओर ले जा सके। इस धारणा को पुष्ट करने के लिए गांधी जी ईशोपनिषद के ईशावास्यमिद सर्वम मंत्र की व्याख्या करते हैं। जिसमें कहा गया है कि सभी कुछ को ईश्वर को समर्पित करने के बाद अपने लिए आवश्यकता से अधिक कुछ न लिया जाए। इसलिए सभी कर्मों का फल ईश्वर को अर्पित करने का अर्थ हो जाता है उन्हें समस्त प्राणियों को अर्पित कर देना। गांधी जी ने इसे न्यासिता कहा है। न्यासिता एक प्रकार का अनासक्त स्वामित्व है। जब सभी कार्य करते हुए उसके फलों का स्वामी हम अन्य को समझ लेते हैं तो हम एक प्रकार के न्यासी हो जाते हैं। गांधी जी की मान्यता है कि वर्तमान में आर्थिक साधनों पर स्वामित्व रखने वाले पूंजीपतियों और भूमि मालिकों को एक न्यासी की तरह व्यवहार करना चाहिए और अपनी पूंजी को एक न्यास में परिवर्तित कर देना चाहिए। गांधी जी मानते हैं कि केवल न्यासिता के द्वारा ही समाज में आर्थिक समानता कायम हो सकती है। गांधी जी मालिकों का आह्वान करते हैं : 'मैं उन व्यक्तियों को जो आज अपने आपको मालिक समझ रहे हैं, न्यासी के रूप में काम करने के लिए आमंत्रित कर रहा हूं अर्थात यह आग्रह कर रहा हूं कि वे स्वयं को अपने अधिकार की बदौलत मालिक न समझें,बल्कि उनके अधिकारों की बदौलत मालिक समझें जिनका उन्होंने शोषण किया है'। न्यासिता एक प्रकार से मालिकों द्वारा शोषण से उत्पन्न पाप का प्रायश्चित भी है। इससे गांधी जी मालिकों या कहे पूंजीपतियों के नैतिक बोध को जागृत करने का प्रयास करते हैं। गांधी जी न्यासिता के सिद्धांत को व्यवहारिक रूप देने के लिए त्रिआयामी (पूंजीपति,श्रमिक और राज्य) योजना प्रस्तुत करते हैं। पूंजीपतियों को नष्ट करने की बात नहीं करते बल्कि पूंजीवाद की समाप्ति की बात करते हैं। गांधी पूंजीपतियों से आग्रह करते हैं कि 'वे स्वयं को उन लोगों का न्यासी समझे जिनके ऊपर वह अपनी पूंजी के निर्माण, उसकी रक्षा और उसके संवर्धन के लिए निर्भर है'। गांधी मजदूर वर्ग से कहते हैं कि 'मजदूरों को पूंजीपतियों के हृदय परिवर्तन की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है'। यदि पूंजी में शक्ति है तो श्रम में भी शक्ति है। मजदूरों को शोषणकारी,दमनकारी व्यवस्था से असहयोग करना चाहिए। गांधी जी श्रमिकों के साथ साथ राज्य से भी इस संबंध में सक्रियता की आशा रखते हैं। गांधी जी कहते है कि 'मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी अगर लोग न्यासी के रूप में आचरण करें,लेकिन यदि वह ऐसा नहीं कर पाते तो हमें राज्य के जरिये न्यूनतम हिंसा का प्रयोग करते हुए उन्हें उनकी संपत्ति से वंचित करना होगा। गांधी अहिंसक प्रतिरोध और अहिंसक क्रांति में यकीन करते थे। मार्क्स और गांधी के साध्य पाने के लिए साधन में अवश्य अंतर हो सकता है लेकिन साध्य एक ही था शोषण से मुक्ति। शोषण की यह अवधारणा पूंजीवादी व्यवस्था से लेकर समाजवादी व्यवस्था तक में निहित है। क्योंकि उत्पादन प्रणाली में उत्पादन को बढ़ाने के लिए जिस आधुनिक प्रौद्योगिकी व तकनीकी का इस्तेमाल किया जा रहा है वह जटिल होने के साथ साथ हिंसक भी है। वर्तमान समय की सबसे मुख्य समस्या रोज़गारविहीन विकास (जॉबलेस ग्रोथ) की है जो विकास प्रक्रिया से जनित है। जिसमें उत्पादन में वृद्धि तो है लेकिन उसके साथ ही रोजगार के अवसर लगातार घटते जा रहे हैं। बैरी कामरान के अनुसार रोजगारविहीन उत्पादन वृद्धि की जिस समस्या का सामना हम आज कर रहे हैं वह वास्तव में विकास की वर्तमान प्रक्रिया की विफलता नहीं,बल्कि उसकी सफलता का अनिवार्य परिणाम है। उत्पादन में वृद्धि विकास का लक्षण है और इस वृद्धि की दर को लगातार बढ़ाते रहने के लिए नित नई प्रौद्योगिकीय परिवर्तन की जरूरत पड़ती है। अर्थशास्त्र की शब्दावली में इसे एचआरडी अर्थात् 'हाई रेट ऑफ डेवलपमेंट' कहा जाता है। जॉबलेस ग्रोथ (रोजगारविहीन वृद्धि) के कारण आज मजदूर अपने अधिकारों और मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कोई संघर्ष भी करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि उनको प्रतिस्थापित करने के लिए अन्य मजदूरों की एक लंबी कतार लगी हुई है। इस आधुनिक विकास के बरक्स गांधी जी के स्वदेशी प्रौद्योगिकी के प्रस्ताव को अपनाए जाने की आवश्यकता है। जिसमें उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ रोजगार के अवसर भी लगातार बढ़ते हैं।

श्रमेव जयते के मायने

विश्व मजदूर दिवस

डॉ . रामेश्वर मिश्र

लेखक स्तंभकार हैं।

हर वर्ष दुनिया में 1 मई का दिन विश्व मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में श्रमिक वर्ग के राष्ट्र निर्माण के कार्यों की सराहना करते हुए 16 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था कि जितनी ताकत सत्यमेव जयते की है उतनी ही ताकत राष्ट्र निर्माण के कार्य में लगे श्रमेव जयते की है। भारत पूरे विश्व में श्रमिकों की शक्ति में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, श्रमिकों के कल्याण के लिए भारत सरकार ने अनेक नवीन योजनाओं का कार्यान्वयन किया है, क्योंकि बिना श्रम शक्ति की सुरक्षा एवं शक्ति के सही नियोजन के अभाव में राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। इसलिए मोदी सरकार ने श्रमिकों के संरक्षण एवं राष्ट्र के विकास के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की। श्रमिकों की पोर्टेबिलिटी की सुविधा के लिए यूनिवर्सल अकाउंट नंबर दिया गया ताकि श्रमिकों की भविष्य निधि की राशि को सही और सुरक्षित तरीके से निकाला जा सके। भारत में श्रमिकों की सही स्थिति और उनके स्वास्थ्य योजनाओं को लेकर सर्वप्रथम कार्य 1881 के फैक्ट्री एक्ट के माध्यम से किया गया था। भारत में श्रमिकों के संगठन और हितों को लेकर सर्वप्रथम कार्य मजदूर किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगारावेलु चेटाधार ने किया। कामरेड सिंगारावेलु चिटाधार ने मद्रास में 1 मई 1923 को मजदूर दिवस के रूप में मनाना शुरू किया, उन्होंने ने उस समय यह मद्रास दिवस के रूप में भी मनाया जाता था। इस दिन ही कामरेड सिंगारावेलु ने यह संकल्प लिया कि एक दिन तो भारतीय कामगारों के हितों एवं संकल्प के लिए हो और उस दिन छुट्टी का प्रावधान हो, तब से लेकर आज तक भारत सहित विश्व के 80 देशों में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने का कार्य किया जाता है। भारतीय कामगारों की अच्छी स्थिति और उनके स्वतंत्रता एवं स्वास्थ्य को लेकर आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी जी चिंतित थे उन्होंने कहा कि देश की तरक्की और देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है जिस देश में किसानों और कामगारों की स्थिति सुदृढ़ होती है वह राष्ट्र शक्तिशाली होता है। इसीलिए गांधी जी ने अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए कहा कि राष्ट्र की तरक्की के लिए सरकार एवं उद्योगपतियों को शासन एक ट्रस्टी की भांति चलाना चाहिए जिससे देश के कामगारों की स्थिति और सुरक्षा के लिए कार्य किया जा सके। भारतीय जनमानस और राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में सहायक कामगार वर्ग और किसानों के हितों के लिए गुरु नानक देव ने भी आवाज उठाई उन्होंने भी समय-समय पर तानाशाही सरकारों से कामगारों के हितों में कार्य करने की चेतावनी दी। भारत में कामगार वर्ग का आधुनिक स्वरुप 19वीं शताब्दी में आया जब औपनिवेशिक शासन काल में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ

भारत में औपनिवेशिक काल में बढ़ते औद्योगीकरण और बाजारवादी अर्थव्यवस्था में जहां बंदरगाहों के निर्माण से मुंबई, कोलकाता और मद्रास में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास हुआ वहीँ तब से कामगार वर्ग की अनदेखी और शोषण का दौर प्रारंभ हुआ। भारत में स्वतंत्रता पूर्व कामगार वर्ग द्वारा अपनी सुरक्षा एवं हितों को लेकर के अनेक टकरार हुए जिसमें कामगारों द्वारा अनेक आंदोलन चलाए गए, होमरूल आंदोलन, असहयोग आंदोलन के साथ श्रमिक आंदोलन का पुनरुत्थान हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बंगाल में शशि पाद बनर्जी ने 1870 में वर्किंग मेंस क्लब की स्थापना की जो कामगारों की सुरक्षा हेतु एक साझा मंच था। इसके बाद भारत में कामगारों की एकता एवं सुरक्षा के लिए बाल गंगाधर तिलक द्वारा स्थापित 1908 में मुंबई मिल हैड्स एसोसिएशन बनाया गया, राष्ट्रवादी नेता एवं एनी बेसेन्ट के सहयोगी बी पी वाडिया ने ट्रेड यूनियन के गठन के लिए कार्य किया। भारत में ट्रेड यूनियनों ने कामगारों के हितों के लिए कार्य करना प्रारंभ किया। इन ट्रेड यूनियनों में सबसे प्रमुख ट्रेड यूनियन ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस था जिसने जोरदार ढंग से भारत में कामगारों की सुरक्षा के लिए कार्य करना प्रारंभ किया जिससे कामगारों की सुरक्षा को लेकर साझा मंचों से कामगार और उनके हितों को लेकर आवाज उठाई गई। कामगारों के हितों को लेकर सरकार के बीच एवं आम जनमानस में जो विचार तेजी से बढ़े उसका कारण यह था कि ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के बड़े नेता जिसमें बाल गंगाधरझतिलक, एम एन जोशी बी पी वाडिया, दीवान चमन लाल, लाला लाजपत राय जैसे बड़े नेता शामिल थे। भारत में समय-समय पर कामगार वर्ग के लिए अनेक संगठनों और नेताओं ने कार्य किया लेकिन आजादी के 75 वर्ष बाद भी कामगार वर्ग के हितों की अनदेखी की जाती है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने कामगारों के हितों को लेकर कई योजनाएं संचालित की है जिसमें ई-श्रम पोर्टल जिसके माध्यम से असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार किया गया, इस पोर्टल पर 28.93 करोड़ असंगठित श्रमिकों ने 400 से अधिक व्यवसाय में पंजीकरण कराया। श्रमिकों के रोजगार की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए सन 2015 में डिजिटल प्लेटफॉर्म नेशनल करियर सर्विस (एनसीएस) ने 31 मई, 2023 तक एनसीएस प्लेटफार्म पर 3.20 करोड़ लोग पंजीकृत है। इसी के साथ श्रमिकों के लिए कानूनी पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए 16 अक्टूबर 2014 को श्रम सुविधा पोर्टल को प्रारंभ किया गया, इसी के साथ ही श्रम कल्याण योजनाएं लांच की गई। इन सब प्रयासों के बावजूद भारत में कामगारों की आय को बढ़ाने को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए, भारत में कामगारों की आय को बढ़ाने के लिए 1 अक्टूबर 2024 को न्यूनतम मजदूरी दर में संशोधन किया गया है जिससे वर्तमान में न्यूनतम मजदूरी दर 783 रुपया प्रतिदिन तथा उच्चतम मजदूरी दर बढ़कर 1035 रुपया प्रतिदिन कर दिया गया जिससे अकुशल श्रमिकों की मासिक आय 20350 रुपए प्रतिमाह तथा उच्च कुशल श्रमिक की 26910 प्रतिमाह आय सुनिश्चित की गई है।

भारत में मोदी सरकार के आने के बाद से भारत में कामगारों को लेकर अनेक अधिकारी योजनाओं का संचालन किया गया जिससे कामगारों के हितों को लेकर योजनाएं बनाई जा रही हैं। कामगारों की आय, सुरक्षा और स्वास्थ्य को लेकर नयी योजनाओं का कार्यान्वयन ही विश्व मजदूर दिवस का सच्ची सेवा होगी।

श्रम दिवस विशेष

सुसंस्कृति परिहार

लेखक स्तंभकार हैं।

सर्वहारा लोक कवि हीरा डोम की प्रासंगिकता

लोकगीत सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त करने में अग्रणी रहे है। हंसते गाते अपने तमाम दुख दर्दों की कहन कला सशक्त रूप में इनमें मिलती है पर इन्हें हमेशा हल्के में लिया जाता रहा क्योंकि इनकी लिपिबद्धता ना के बराबर है। इसके बावजूद लोकगीत लोकसंस्कृति का जरूरी हिस्सा रहे हैं इनमें किसान और मजदूरों की व्यथा के साथ महिला उत्पीडन को बराबर गायि जाता रहा है। विशेष बात ये इनमें स्त्री पुरुष दोनों अपने को अभिव्यक्त करते रहे हैं। इसमें जीवंत सामाजिकता का बोध होता रहा है। आइए बात करते हैं एक ऐसे लोककवि की जो पटना के सर्वहारा वर्ग से आते है। मेहनतकश हीरा डोम ने अपनी जाति के उत्पीड़न को बड़े ही मर्मस्पर्शी अंदाज के साथ, गवेषनापूर्वक सामंती व्यवस्था पर कटाक्ष किये। वे शायद लोकगीत के माध्यम से सटीक आवाज उठाने वाले ऐसे पहले लोककवि हैं। भोजपुरी में लिखे उनके लोकगीत 'अछूत की शिकायत' का सन् 1914 में जब सरस्वती पत्रिका में प्रकाशन हुआ तब यह महत्वपूर्ण लोककवि सबकी नजरो में आया।

ये वह दौर था ,जब समाज में ब्राह्मणवाद , जातिवाद और धार्मिक अंधविश्वास चरम पर था। अछूत जातियों के प्रति तीव्र घृणाभाव मौजूद था। प्रतिकार स्वरूप लिखी गई इस कविता की क्या और कैसी प्रतिक्रियायें हुई होंगी हम समझ सकते हैं कबीर की भांति सामाजिक दंश के शिकार हीरा डोम भी हुये होंगे। तभी तो धर्मान्तरण का विचार उनके मन में आया। ये और बात है कि धर्म की जड़ों को वे उखाड़ नहीं पाये।मन की बात गीत में कह डाली देखिये लोकगीत --

हमनी के रात दिन दुखवा भोगत बानी,
हमनी के सहेबे से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुख भगवन ओन देखताजे
हमनी के कबले कलेसबा उठाइबि।
पदरी सहेब के कचहरी मेंजाइबिजां
बेधरम होके रंगरेज बनि जाइबि
हाय राम! धरम न छोड़तबनत बाजे
बेधरम होके कैसे मुंहवा देखाइबि

इसी कविता के दूसरे चरण में कवि संशय करता हुआ लिखता है कि ईश्वर ने भी उसे अछूत समझ लिया है इसलिये उसने प्रह्लाद ,गजराज, द्रोपदी और विभीषण की रक्षा तो की पर हमारी नहीं। धर्मान्धता की जकड़न में जकड़े होने के बावजूद इस तरह के सवाल उठा कर कवि ने ईश्वर को भी कटघरे में खड़ा कर दिया। बेबाकी कवि को बड़ा बनाती है। देखिये ---

खमबा के फारि प्रह्लाद के बचवले जो
ग्राह के मुंह से गजराज के बचवले
धोती जुरजोधना कै भैइया छोरत रहै
परकट होके तहां कपड़ा बढ़वले
मरले खनवा के पलले भभिखना के,
कानी अंगुरी पै धैके पथरा उठवले
कहवा सुतल बाटे सुनत न बाटे अब
डोम जानि हमनी के छुए से डेर इले

सर्वहारा का दिन रात श्रम करके जीवन गुजारना,बामन को मन माफिक भीख मिलना, ठाकुर का लाठी चलाना ,बनिया का डंडी मारकर बैठे ठाले जीवन यापन कवि को नागवार गुजरता है वे अंग्रेज सरकार से इस विषम तंत्र की शिकायत का जज्बा रखते है। वे यकीनन श्रम के शोषण को बखूबी पहचान गये थे देखिये तीसरे चरण में इस वेदना की कसक --

हमनी के राति दिन मेहनत करीले जा,
दुईगो रुमयावा दरमहा में पाइबि
ठकुरे के सुख सेत घर में सुतल बानी
हमने के जोति जोति खेतिया कमाइबि
हकिमे के लसकरि उतरल बानी
जेत उहबो बेगरिया में पकरस जाइबि
मुंह बान्हि ऐसन नौकरिया करतबानी
ई कुलि खबरि सरकार के सुनाइबि

वे श्रम की महत्ता भलीभांति समझते हैं।श्रम के प्रति गौरव बोध से वे आपूरित है। वे कहते हैं कि आत्मा यानि ईश्वरांश सबमें है तो यह भेदभाव क्यों? समाज के ठेकेदारो से बड़े मार्मिक सवाल स्वाभिमान पूर्वक वे पूछते है जिनका कोई जवाब इनके पास नहीं देखें लोकगीत का चतुर्थ चरण ---

बभने के लेखे हम भिखिया न मांगवजा
ठकुरि के लेखे नहि लउरि चलाइबि
सहुआ के लेखे नहि डांड़ी हम मारबजा,
अहिरा के लेखे नहिं इ या चोराइबि
भटऊ के लेखे न कबित हमजोरबजा
पगड़ी न बान्हि के कचहरी में जाइबि
अपने पसिनवा के पइसा कमाइबि
घर भर मिलि जुलि बांटि चोंटि खाइबि

अंतिम चरण में,कवि अपने समाज की दारुण व्यथा का हवाला देता है वह कहता है हाड़ मास की देह तो सबकी है पर ब्राह्मण पूजे जाते है हमें कुयें के पास नहीं जाने देते पानी पीना तो दूर की बात है कीचड़ का पानी पीने हम मजबूर है और तो और हमें जूतों से मार मार कर हमारे हाथ पैर तोड़ दिये जाते है। इस तरह का जीवन भी कोई जीवन है? देखें ---

हड़वा मसुइया के देहिया है हमनी के
ओकरे के देहिया बभन ओं के बानी
ओकरा के घरे घरे पुजवा होखत बाजे
सगरे इसकवा भ इले जजवानी
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइलेजा
पांके में से भरि भरि पिअतानी पानी
पनही से पिटि पिटि हाथ गोड़ तुरि देलें
हमनी के एतनी काही के हलकानी ?

ये जीवन भी कोई जीवन है कहते हुये कवि एक जागरण का पैगाम देता है। सामाजिक व्यवस्था का ये चक्र आज भी नवीनतम विसगतियों के साथ मौजूद है। सामाजिक जागरण के पहरूये कवि हीरा डोम आज भी प्रासंगिक हैं। कमोवेश आज वही तंत्र अपना जाल फैला रहा है। मई दिवस, शोषण मुक्त दिवस के रूप में मनाया जाता है श्रमेव जयते का गुंजार करने वाले साथी हीरा डोम का नाम तब तक याद किया जायेगा जब तक सामाजिक व्यवस्था में सर्वहारा वर्ग बराबर का भागीदार नहीं बन जाता। वे आज भी प्रासंगिक हैं। मई दिवस अमर रहे।

श्रम दिवस विशेष

अस्मिता सिंह

लेखिका शोधार्थी हैं।

मेड़ें, मजदूर और मिटती संवेदनाएं

भरी दोपहरी में खेतों में काम करने वाले मजदूर की निगाहें खेत की मेड़ पर होती है कि थोड़ी देर पेड़ के नीचे ठंडी छाया में विश्राम कर लू लेकिन अब मेड़ तो है, पेड़ गायब है। भारत के ग्रामीण परिदृश्य में खेतों की मेड़ों पर ख ड़े पेड़ केवल हरियाली का प्रतीक नहीं, बल्कि खेतिहर मजदूरों के लिए जीवनदायिनी छाया और सुरक्षा का माध्यम रहे हैं। तपती धूप में जब शरीर जवाब देने लगता था, तब यही पेड़ उनकी थकी हुई साँसों को राहत देते है, छांव में कुछ पल का विश्राम जीवनदान जैसा लगता। अधिक कृषि उत्पादन और भूमि उपयोग के लालच में इन पेड़ों को तेजी काटा जा रहा है, जिससे मजदूरों के लिए कार्यस्थल और अधिक अमानवीय होता जा रहा है।

खेतों की हरियाली तो अब भी बची है, मगर मजदूरों की ज़िंदगी से सुकून की छांव गायब हो गई है। पेड़ों के अभाव में श्रमिक अब खुले आसमान के नीचे, 45 डिग्री से ऊपर झुलसती गर्मी में काम करने को मजबूर हैं, जहाँ लू और हीट स्ट्रोक जानलेवा साबित हो रहे हैं। गाँव के छोर पर फैले विशाल खेत कभी जीवन की तरह हरे-भरे थे। हर खेत की मेड़ पर नीम, बाबूल, आम और जामुन के वृक्ष सिर ऊँचा किए खड़े रहते। गर्म दोपहरी में मजदूर इन पेड़ों की छांव तले सुस्ताते, बच्चे पगडंडियों पर दौड़ते और किसान आपस में अपने खेतों की सीमाएँ मेड़ों के पेड़ों से पहचानते। मेड़ें न केवल सीमाएँ तय करती थीं, बल्कि सहअस्तित्व का भी प्रतीक थीं। पर समय बदला अब खेतों के बीच की पगडंडियाँ, जिनसे गाँव वाले आवागमन करते थे, धीरे-धीरे मिटा दी गईं। खेत के बीच से निकलने वाले रास्ते और खेत की मेड़ को काट कर जोत बनाने के लालच ने उन पगडंडियों को निगल लिया। आपसी सहमति की जगह विवादों ने जन्म लिया। मेड़ के पेड़ों को अवरोध मानकर काट डाला गया। गाँव-गाँव में 'मेड़ काटने', 'रास्ता बंद करने' को लेकर मुकदमे शुरू हो गए। जो रास्ते कभी जीवन जोड़ते थे, वे अब दीवारें बन गए। किसान आपस में कटने लगे और मजदूर... मजदूरों के सिर पर अब न धूप से बचाव था, न विश्राम का आसरा। जहाँ कभी हवा में आम की खुशबू होती थी, अब वहाँ सिर्फ तपती ज़मीन की गर्म लपटें उठती हैं। भारत में हरित क्रान्ति के जनक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन ने भारत की हरित क्रांति की सफलता का श्रेय खेतिहर श्रमिकों को देते हुए कहा था कि भारत की हरित क्रांति केवल वैज्ञानिक नवाचारों से नहीं, बल्कि खेतों में श्रमिकों की अथक मेहनत से संभव हो सकी थी।

आज भी भारत की लगभग 41-43 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, जिनमें से 22-25 प्रतिशत लोग खेतिहर मजदूर हैं, अर्थात् जो स्वयं की भूमि न रखते हुए दूसरों के खेतों में कार्य करते हैं। छोटे किसानों और सीमांत कृषकों के पास यंत्र खरीदने की क्षमता न होने के कारण कृषि कार्यों में मानव श्रम की भारी आवश्यकता बनी हुई है। हालाँकि पिछले वर्षों में ट्रैक्टर, थ्रेशर, हार्वेस्टर जैसे उपकरणों का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन सिर्फ 45-50 प्रतिशत कृषि कार्यों में ही यंत्रों का समुचित उपयोग हो पाया है। असमान भूखंड, छोटी जोत और परंपरागत खेती की प्रवृत्ति के कारण देश के अधिकांश गाँवों में आज भी खेतिहर मजदूरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। दरअसल भारत में खेतिहर मजदूरों के लिए अलग से न तो कोई विशेष अधिकार है न कोई कल्याणकारी योजना। यहाँ मजदूर पहले से ही न्यूनतम मजदूरी, निम्नतम काम दशाएं, अनिश्चित रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याओं से जूझते आ रहे हैं। अब काम की जगह भी उनके लिए असुरक्षित होती जा रही है। ऐसे समय में खेतों की मेड़ों पर फिर से पेड़ लगाना एक पर्यावरणीय जिम्मेदारी भर नहीं, बल्कि श्रमिकों के श्रम की गरिमा को लौटाने की दिशा में एक मानवीय कदम है।

नीति-निर्माताओं और समाज को मिलकर यह समझना होगा कि पेड़ों की छांव श्रमिकों के जीवन की भी रक्षा करती है।प्रकृति और मनुष्य के संबंध को समझाते हुए महात्मा गांधी ने भी कहा था, 'पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी एक के भी लालच को नहीं।' आज खेतों से पेड़ों का अंधाधुंध कटना इसी लालच का परिणाम है, जिसकी कीमत हमारे मजदूर चुका रहे हैं। पेड़ों की अनुपस्थिति खेतों को निर्जीव कर रही है। खेतों की मेड़ों पर लगे पेड़ों से मजदूरों को न केवल शारीरिक राहत मिलती थी, बल्कि वे अतिरिक्त लाभ भी देते थे जिसमें फल, चारा और प्राकृतिक ठंडक शामिल है। दुर्भाग्यवश, आज प्रकृति और मानव श्रम के बीच का संतुलन खतरे में है। यदि हमें अपने ग्रामीण श्रमिकों को एक सम्मानजनक और सुरक्षित कार्यस्थल देना है, तो खेतों की मेड़ों पर पुनः वृक्षारोपण को प्राथमिकता देनी होगी। पेड़ों का संरक्षण केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं करता, बल्कि यह श्रमिकों के जीवन की गरिमा, उनके स्वास्थ्य और श्रम की सुरक्षा का भी माध्यम बनता है।

खेतों में पेड़ों की छांव न केवल तपती धूप से राहत देती है, बल्कि मिट्टी और जल का संतुलन बनाए रखकर श्रमिकों को बेहतर कार्य वातावरण भी प्रदान करती है। खेतों की मेड़ों पर पुनः वृक्षारोपण करना, रास्तों का सम्मान करना और साझा प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना यही भविष्य की आवश्यकता है। अब समय आ गया है कि हम एक नई राष्ट्रीय चेतना का निर्माण करें, जिसमें प्रकृति और श्रम दोनों का सम्मान हो क्योंकि इन्हीं के संरक्षण में हमारे भविष्य की नींव छिपी है।

नि:स्वार्थ मानव सेवा के बेमिसाल बारह साल

● आशु भैया के जन्मदिन पर किलेदार परिवार ने की मानवता की मिशाल कायम : केंद्रीय मंत्री डी. डी. उइके

बैतूल । जिले के प्रतिष्ठित किलेदार परिवार के युवा उद्यमी, समाजसेवी अमर सिंह आशु किलेदार के जन्मदिन पर विगत बारह वर्ष से निस्वार्थ रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता रहा है, जिसमें प्रतिवर्ष बडी संख्या में रक्तदाता रक्तदान करते हैं। आरएसके परिवार द्वारा जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मानव सेवा का यह कार्य मानवता की मिशाल कायम करते हुए समाज में सकारात्मकता का संदेश देता है। फेस्टिवल ऑफ लाइफ के बैनर तले यह आयोजन वास्तविता में जीवन का एक उत्सव नजर आता है। वहीं इस सुअवसर पर किलेदार परिवार के साथ ही समाजसेवियों ने 105 यूनिट रक्तदान कर कीर्तिमान रच दिया। रक्तदान शिविर के शुभारम्भ पर सांसद बैतूल एवं केंद्रीय राज्य मंत्री डीडी उइके ने अपने उद्बोधन में कहा कि आरएसके परिवार ने अमरसिंह आशु किलेदार के जन्मदिन पर मानवता की सेवा का जो संकल्प लिया है वह स्तुत्य है। पीडित मानवता की सेवा के लिए रक्तदान से बढा कोई दूसरा पुनीत कार्य नहीं हो सकता। उन्होंने आशु भैया को जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा कि लगातार बारह वर्षों से ऐसा अनूठा आयोजन कर किलेदार परिवार ने मानवता की निस्वार्थ सेवा की मिशाल कायम की है। इस अवसर पर किलेदार परिवार के शुभचिंतको एवं समाजसेवियों की बडी संख्या में उपस्थिति रहे।

71 वर्षीय मजदूर को किया सम्मानित, अटल सेना ने मजदूर दिवस मनाया

बैतूल। मजदूर दिवस की पूर्व संध्या पर अटल सेना ने प्रतिवर्षानुसार मजदूर सम्मान समारोह का आयोजन किया। जिसमें 71 वर्षीय रविंद्र भावसार जो 71 को सम्मानित किया गया। इस मौके पर संगठन के प्रांत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केन्दु बाबा) ने बताया कि पुरानी सब्जी मंडी पिपलेश्वर महादेव परिसर में श्री भावसार अपनी मेहनत करके अपना गुजारा करते हैं। वे 1995 में यह अपने परिवार से अलग हुए और आज एकल जीवन व्यतीत करते हैं। इतने स्वाभिमानी है कि भूखा रहना पसंद करेंगे लेकिन कभी किसी भंडारे में या रेन बसेरा जहां मजदूरों को 5 रूपए में भोजन मिलता है वहां भी पेट भरना उचित नहीं समझते मेहनत करके अपनी रोजी कमाते हैं। आज इतनी उम्र में भी मेहनत का जज्बा जिंदा है जिससे वह अपना गुजर बसर कर रहें हैं। अटल सेना का मजदूर दिवस पर यह निरंतर 15वां आयोजन है। इस अवसर पर श्रीमती सेवंती साहू, श्रीमती सुमन खड़से, श्रीमती सविता ताई, अनिल जैन, शीश राव पवार, कृष्णा सोनी, सोहनलाल राठौड़, नंदू रावत, दिलीप गायक, सहित क्षेत्र के व्यापारी ने मौजूद थे। केन्दु बाबा ने बताया कि 10 वर्ष पूर्व तत्कालीन विधायक हेमंत खंडेलवाल विधायक ने मजदूरों के लिए गंज बस स्टैंड पर अस्थाई शेड बनाने के लिए 2 लाख रुपए नगर पालिका बैतूल को विधायक निधि से दिए थे लेकिन बैतूल नगर पालिका ने मजदूरों के हित में कोई सुध नहीं ली। वह पैसा कहां गया, हर मजदूर दिवस पर याद दिलाया जाता है कि परन्तु कोई कार्यवाही नहीं हुई है। दुर्भाग्य है कि देश के बड़े बड़े निर्माण करने वाले मजदूरों के सिर पर छत नहीं है। अटल सेना ने कलेक्टर बैतूल से मांग की है कि मजदूरों के हित में शेड निर्माण कराया जाए।

तीन दिवसीय क्राफ्ट डिमॉन्सट्रेशन कम अवेयरनेस प्रोग्राम का समापन

बैतूल। हस्तशिल्प सेवा केंद्र नागपुर, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 28 से 30 अप्रैल तक बैतूल जिले के विद्या संस्कार वैली पब्लिक स्कूल में छात्र छात्राओं के लिये तीन दिवसीय शिल्प प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बैतूल जिले के चार हस्तशिल्प शिल्पकारों ने क्रमशः मेटल क्राफ्ट, टैक्सटाइल हैंडिक्राफ्ट, जरी जरदोजी एवं मेटल ज्वेलरी क्राफ्ट में अपने शिल्प कला के उत्पादों का कला प्रदर्शन करते हुए छात्रों को इसे बनाने के हुनर भी सिखाए। स्कूल के छात्र छात्राओं ने इस कार्यक्रम में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए स्वयं के द्वारा भी क्राफ्ट आइटम बनाए एवं इस कार्यक्रम में प्रदर्शन किया। छात्रों की इस भागीदारी के लिए, हस्तशिल्प सेवा केंद्र नागपुर वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सभी को प्रमाण पत्र देकर उनकी हौसला अफजाई की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन स्कूल के प्रिंसिपल अनिल अहिरवार एवं अवधेश ठाकुर सहायक निदेशक हस्तशिल्प, वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार, दलीप कुमार, हस्तशिल्प अधिकारी, देवेंद्र सिंह एवं नीलम शर्मा, कार्यकारी निदेशक, दृष्टिकोण आर्ट एंड क्राफ्ट प्रोड्यूसर के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया ।

अक्षय तृतीया पर मटकों का पूजन कर शुरू किये मांगलिक कार्य, सोना-चांदी सहित अन्य दुकानों पर रही भीड़

ब्राह्मण समाज ने किया भगवान परशुराम का विशेष पूजन, हुए विभिन्न आयोजन

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिलेभर में भगवान परशुराम का जन्मोत्सव अक्षय तृतीया का पर्व श्रद्धाभाव के साथ मनाया गया। इसी तारतम्य में ब्राह्मण समाज के आराध्य देव परशुराम की जयंती पर सर्व ब्राह्मण समाज एवं सनातन ब्राहाण समाज द्वारा विभिन्न आयोजन भी किए गये। गौरतलब है कि ब्राह्मण समाज के आराध्य भगवान परशुराम का जन्मोत्सव इस वर्ष सादगी से सेवा कार्यों और पूजन पाठ कर मनाने का निर्णय पिछले दिनों विप्र समाज समितियों द्वारा लिया गया था, चूंकि हाल ही में कश्मीर के पहलगाम में आंतकवादियों द्वारा टूरिस्टों से धर्म पूछकर की गई हत्या के विरोध और इस हमले के मृतकों को श्रद्धांजली देते सर्वब्राह्मण समाज और परशुराम सेना द्वारा यह निर्णय भी लिया कि इस वर्ष शोभायात्रा नहीं निकाली जायेगी। बल्कि पूजन-पाठ एवं सेवाभावी कार्यो के द्वारा अक्षय तृतीया का पर्व मनाया गया।

अक्षय तृतीया पर हिन्दूओं ने जहां मटके का पूजन किया। वहीं महाराष्ट्रीयन समाज में इसे अखातीज कहा जाता है जिसे लेकर समाजजनों ने मटके और आम की खरीदी की। महाराष्ट्रीयन समाज में आम रस और पूरणपोली का विशेष भोजन बनाकर पूरा परिवार ग्रहण करता है। बताया जाता है कि इस पर्व के बाद मांगलिक कार्यो की शुरुआत हो जाती है। अक्षय तृतीया पर मिट्टी के मटकों की

खूब बिक्री हुई, क्योंकि नए मटके में जल भरकर उसका पूजन किया जाता है। मान्यतानुसार ऐसा करने से घर में धन-धान्य सदैव भरा रहता है। भरे हुए घडे का पूजन करने से धन के भंडार अक्षय रहते हैं। हिन्दूओं द्वारा अखातीज पर मटके का पूजन करने के बाद ही मांगलिक कार्य शुरू किए जाते हैं। इस दिन पूजन के बाद परिवार के मांगलिक कार्य शुरू किए जाते। इस दिन आम रस, पुरणपोली, रसी, चावल व अन्य व्यंजन बनाकर उसका भोग लगाया जाता है। कुम्हार अशोक प्रजापति ने बताया कि चैत्र और वैशाख मास के दौरान सामान्य दिनों में प्रतिदिन 30-40 मटकों की बिक्री होती है, लेकिन केवल अक्षय तृतीया के दिन 300 से 400 मटके बिके। इसके लिए एक माह पूर्व से ही हमनें मिट्टी लाकर मटके बना रहे थे। तब कहीं जाकर अक्षय तृतीया तक मटके तैयार हुए। उन्होंने बताया कि बाजार में मटके 50 से 250 रुपए तक की कीमत में बिके। खरबूजा व तरबूज 20 से 30 रुपए किलो में बिका। चूंकि गर्मियों में काली मिट्टी से निर्मित मटकों में पानी शीघ्र ठंडा होता है। इसलिए इन दिनों में काली मिट्टी से बने मटकों की मांग अधिक रहती है।

बाजार में रहीं जबरदस्त ग्राहकी, लोगों ने जमकर की खरीदी

शादी के सीजन के चलते भी बुधवार को अक्षय तीज पर लोगों ने जमकर खरीदारी की। जिससे बाजारों में देर रात तक चहल-पहल दिखाई दी। व्यापारियों ने बताया कि बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक सामानों, ज्वेलर्स, रेडीमेड कपड़े, सोने-चांदी की दुकानों पर सबसे ज्यादा भीड़ देखी गई। जिससे अक्षय तृतीया पर अच्छा व्यापार हुआ। व्यापारियों का कहना है कि अक्षय तृतीया की तिथि पर बाजार में ग्राहकों की रौनक बनी रही। तापमान 42 डिग्री के आसपास होने के बावजूद भी लोग भरी दोपहरी में बाजार पहुंचे और खरीदी की। शादी का सामान खरादने के लिए कपड़ा, बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक सामान, रेडीमेड कपडे, सोने-चांदी की दुकानों पर सुबह से देर रात तक ग्राहकी बनी रही।

सर्वब्राह्मण समाज ने चढ़ाया चांदी का मुकुट, हुए विभिन्न आयोजन

सर्वब्राह्मण समाज के बैनर तले सुबह 8 बजे जिला अस्पताल में अंकुरित आहार का वितरण किया गया। तत्पश्चात जिला सर्व ब्राह्मण समाज बैतूल द्वारा दत्त मंदिर सिविल लाइन बैतूल में सुबह दस बजे से पूजन, आरती एवं प्रसादी वितरण कार्यक्रम हुआ। जिसमें पधारे बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने उपस्थित सामाजिक बंधुओं से मंगल भवन बनाने में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर सर्वब्राम्हण समाज के जिला अध्यक्ष नरेंद शुक्ला, पं. कांतु दीक्षित, पं. केके पांडे, पं. प्रमोद शर्मा, पं. शिवकुमार शुक्ला, पं. सुनील द्विवेदी, पं. बबला शुक्ला, पं. सुनील गुड्डू शर्मा, पं. टिटू पांडे, पं. शैलेश गुबरेले, पं. विकास मिश्रा, पं. विक्रम वैध, पं. ओम द्विवेदी, पं. सलील हरदास, पं. धीरज मिश्रा, पं. संजय द्विवेदी सहित बड़ी संख्या में विप्र समाज के स्वजातीय बंधु उपस्थित थे। पत्पश्चात शाम 6.30 बजे गंज स्थित शनि मंदिर में भगवान परशुराम की प्रतिमा को चांदी का मुकुट पहनाया गया तथा महाआरती एवं प्रसादी वितरण का कार्यक्रम हुआ।

सनातन महासमाज ने करवाया 31 ब्राहाणों का उपनयन संस्कार, परशुराम मंदिर में हुआ पूजन एवं भंडारा

बैतूल। सनातन महासमाज बैतूल के बैनर तलें प्रतिवर्षनुसार इस वर्ष भी भगवान परशुराम जयंती एवं सामुहिक उपनयन संस्कार कार्यक्रम भगवान परशुराम मंदिर बडोरा बैतूल में मनाया गया। सनातन ब्राम्हण महासमाज के अध्यक्ष पं. सुभाष मोहन पाण्डेय, कार्यकारी अध्यक्ष महेंद्र दीक्षित, कार्यक्रम संयोजक पं. राजेश अवस्थी ने बताया कि भगवान परशुराम मंदिर में सुबह 7-30 बजे भगवान शिव परशुराम का अभिषेक एवं हवन-पूजन किया गया। जिसके पश्चात सुबह 8 बजे सामूहिक उपनयन संस्कार कार्यक्रम में 31 ब्राहाणों का जनेऊ संस्कार हुआ, तत्पश्चात दोपहर 1 बजे से मुख्य अतिथियों जिनमें बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे एवं बैतूल नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमति पार्वती बारस्कर द्वारा कार्यक्रम को सम्बोधित किया गया। इस अवसर पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज के समय में भगवान परशुराम के बताये गये रास्ते पर चलना

आवश्यक हो गया हैं, उन्होंने कहा कि ब्राम्हण समाज सदैव सभी समाजों का मार्गदर्शक रहा है, और देश का प्रतिनिधित्व किया है। वर्तमान समय में शस्त्र एवं शास्त्र दोनों ही पूरे देश के लिये नितांत आवश्यक है। उन्होंने मंच से घोषणा कर समाज के मंगल भवन बनाने हेतु तत्परता से बनाने हेतु हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके पश्चात कार्यक्रम में पधारे जनप्रतिनिधियों एवं विप्र समाज के प्रबुद्धजनों का सम्मान किया गया। तत्पश्चात भोजन प्रसादी वितरित की गई। शाम 6 बजे से भगवान परशुराम चौक जेएच कॉलेज के पास बैतूल में पूजन एवं प्रसादी वितरण का कार्यक्रम भी हुआ। इस अवसर पर सनातन ब्राम्हण समाज महिला अध्यक्ष श्रीमती साक्षी शर्मा, संगीता अवस्थी, उषा द्विवेदी, पं. नरेन्द्र अवस्थी, पंडित अनिल मिश्रा, पं. नारायण मिश्रा, पं. विश्वास मुनि दीक्षित, पं. संतोष मिश्रा सहित बड़ी संख्या में विप्र समाज के बंधु उपस्थित थे।

हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र पर सैकड़ों ध्यान प्रेमियों ने किया ध्यान

बाबूजी महाराज के 126 में जन्मदिवस पर सामूहिक ध्यान का आयोजन

बैतूल। हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र वृंदावन नगर रानीपुर रोड पर रामचंद्र मिशन (हार्टफुलनेस ध्यान) के संस्थापक रामचंद्र बाबूजी महाराज के 126 वे जन्म दिवस पर सामूहिक ध्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ो लोगों ने एक साथ ध्यान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रमोद अग्रवाल, राजीव खंडेलवाल कमलनयन अग्रवाल, गोरख परुलकर, डॉक्टर आनंद मालवी मुकेश खंडेलवाल, तूलिका पचौरी द्वारा दीपप्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात डॉ. आनंद मालवीय के द्वारा संस्थान का परिचय बताया गया। तत्पश्चात संस्थान के प्रशिक्षण गोरख पारुलकर ने सभी को रिलैक्सेशन की तकनीक से अवगत कराकर ध्यान कराया। ध्यान के पश्चात संस्थान के द्वारा बच्चों के लिए चलाई जाने वाले ब्राइटर माइंड तकनीक का प्रदर्शन किया गया। जिसमें एक बच्ची ने आंख में पट्टी बांधकर सिर्फ छूकर विभिन्न रंगों की बॉल का रंग बताया। साथ ही नोट को पडक़र और सूंघकर कितने का नोट है, यह बताया गया। नोट पर लिखे हुए नंबर को भी बता दिया। जिसने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इसके पश्चात ध्यान केंद्र बैतूल के द्वारा 50 सामाजिक संस्थाओं को उनके द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों को देखते हुए सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के कमल नयन अग्रवाल ने सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन रोहित बघेल एवं तूलिका पचौरी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में हार्टफूलनेस ध्यान केंद्र बैतूल के भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार, प्रशिक्षक बीआर गभाडे, रोहित बघेल, अभ्यासी कमलनयन अग्रवाल, अशोक माहौरे डॉ. आनंद मालवीय, हेमंत चिल्हाटे, आशीष पचौरी, शिशिर वाडेकर, दीपक राजपूत, परिहार जी, अनुराग भैया, तूलिका पचौरी, मंजू अग्रवाल, राजू गाबंडे, आशीष कोकने ,भूपेंद्र पवार सुनील पवार उपस्थित थे।

संस्थाओं का किया सम्मान – घरौंदा, सेवा सदन आंख जांच केंद्र, स्वच्छता ब्रांड एंबेसडर नेहा गर्ग, 75 कदम 99 दिन, जनसाहस, मां शारदा समिति, प्रदीपन, आवाज एनजीओ, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, लायंस क्लब बैतूल, नेहरू युवा केंद्र, देवी अहिल्याबाई होल्कर समिति, सिर्डि संस्थान, पर्यावरण संरक्षण समिति, रघुकुल डिफेंस एकेडमी, लायंस क्लब महक, एनएसएस, ओमकार वेलफेयर एंड एजुकेशन सोसाइटी, प्रत्याशा फाउंडेशन, भारत विकास परिषद, विश्व मंगल सभा, पतंजलि योग समिति, ग्रीन आर्मी, जीडी खंडेलवाल मेमोरियल ट्रस्ट, श्री श्रीज्ञान मंदिर, त्रिवेणी फाउंडेशन, वरिष्ठ नागरिक संगठन, आर्ट ऑफ़ लिविंग, मध्य प्रदेश शिक्षक संघ जिला इकाई, नित्या सेवा समिति, ताप्ती सेवा समिति, सतगुरु देव श्री वासुदेव सेवा समिति भोपाल, हनुमान चालीसा मंडल सारणी, महावीर इंटरनेशनल, प्रगति सेवा समिति, हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र हरदा, हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र जुन्नारदेव, श्रीमती मीना खंडेलवाल, श्रीमती निहारिका भावसार, हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र पुणे, ब्रह्माकुमारी आदि संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना से जिले के 2 लाख 52 हजार 872 किसान हुए लाभान्वित

जिले के हितग्राही संबल योजना से हुए लाभान्वित

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने 30 अप्रैल को धार जिले के उमरबन में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत प्रदेश के 85 लाख से अधिक किसानों के खाते में वर्ष 2025-26 की प्रथम किश्त 1704.94 करोड़ की राशि अंतरित की। इस अवसर पर प्रदेश के 27 हजार से अधिक संबल हितग्राहियों को 600 करोड़ की राशि तथा 1870 करोड़ की माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना एवं विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण भी किया गया। बैतूल कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष कृष्णा लोखंडे, जनपद सदस्य श्री काकोडिया, सुधाकर पवार, कमलेश सिंह, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, एसडीएम राजीव कहार सहित हितग्राही उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा सम्बल वन क्लिक कार्यक्रम में बैतूल जिले के कुल 682 हितग्राहियों को संबल योजना अंतर्गत अनुग्रह सहायता राशि के 627 सामान्य मृत्यु के प्रकरणों में 53 दुर्घटना मृत्यु के प्रकरणों में एवं 2 आंशिक अपंगता के प्रकरणों में अनुग्रह सहायता राशि प्रदाय की गई।इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईके ने संबल योजना के हितग्राहियों को चेक प्रदान किए। इसके अलावा मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत जिले के 2 लाख 52 हजार 872 किसानों को 50 करोड़ 57 लाख 44 हजार की राशि अंतरित की गई। जिले में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में विभिन्न जनप्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इन कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दिखाया गया।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना, भीमपुर में 775 जोड़े विवाह के अटूट बंधन में बंधे

केंद्रीय मंत्री के मुख्य आतिथ्य में धूमधाम और विधिवत रूप से संपन्न हुआ सामूहिक विवाह कार्यक्रम

बैतूल। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर बुधवार को मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत भीमपुर में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 775 जोड़े विवाह के अटूट बंधन में बंधे। कार्यक्रम में बैंड बाजे के साथ धूमधाम से बारात कार्यक्रम स्थल पर पहुंची जहां बारात का भव्य स्वागत स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने किया। कार्यक्रम में 47 जोड़ों का वैदिक रीति रिवाज, 725 जोड़ो का भूमका रीति और 3 जोड़ो का निकाह संपन्न हुआ। भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए प्रशासन द्वारा वर वधु और उनके साथी परिजनों के लिए बैठक सहित पेयजल, भोजन, कूलर इत्यादि की उत्तम व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में सभी नव दाम्पत्य जीवन में प्रवेश कर रहे 775 जोड़ो को 49 हजार की राशि भी अंतरित की गई। विवाह सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराने के लिए प्रशासन द्वारा 775 जोड़ो के लिए कुल 20 सैक्टर बनाएं गए। लगभग 196 वेदियां बनाई गईं। प्रत्येक वेदी पर चार जोड़ो का विवाह कराया क्या। सैक्टर पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने के लिए सैक्टर प्रभारी और सहायक सैक्टर प्रभारी बनाएं गए। सामूहिक विवाह कार्यक्रम में जनपद, राजस्व, सामाजिक न्याय, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग के अमले ने सक्रिय भूमिका निभाई। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए फायर ब्रिगेड, एंबुलेंस और मेडिकल टीम भी मौके पर तैनात रही। केंद्रीय मंत्री दुर्गादास ऊईके,

विधायक महेंद्र सिंह चौहान, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जनपद अध्यक्ष भैयालाल इरपाचे, सुधाकर पवार इत्यादि मुख्य अतिथियों के उपस्थिति में विवाह सम्पन्न हुआ। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन ने भी कार्यक्रम की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया और अधिकारियों को समुचित व्यवस्थाओं के लिए पाबंद किया। अनुविभागीय अधिकारी भीमपुर अजीत मेरावी, उप संचालक सामाजिक न्याय रोशनी वर्मा, जनपद सीईओ और अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाई।

निर्धन परिवारों की चिंता को इस योजना ने समाप्त किया – केंद्रीय मंत्री श्री ऊईके ने कहा कि प्रदेश के संवेदनशील मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव सभी वर्गों के कल्याण और लिए प्रतिबद्ध हैं। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना मध्यप्रदेश सरकार की अंतरात्मा से निकली एक महत्वपूर्ण योजना है। निर्धन परिवार जो अपनी बेटियों के विवाह को लेकर चिंतित रहते थे, उनकी चिंता को इस योजना ने जड़ से समाप्त किया हैं। योजना के तहत धूमधाम से विधिवत विवाह सम्पन्न कराने के साथ ही 49 हजार की राशि भी वर और वधु को दी जा रही हैं, जो उनके नव वैवाहिक जीवन के शुरुआत का आधार बनेगी। विधायक श्री चौहान ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मंशानुरूप प्रदेश के साथ बैतूल जिले में भी व्यापक स्तर पर मुख्यमंत्री कन्या विवाह के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। निर्धन परिवार जो अपनी जमीन, जायदाद को बेचकर अपनी बेटियों का विवाह कराते थे, उनके लिए यह योजना वरदान साबित हुई हैं।

आतंकी हमले के विरोध में पेंशनर्स ने निकाला कैंडल मार्च, शहीद पर्यटकों को दी श्रद्धांजलि

बैतूल। जम्मू-कश्मीर के पहलगांव में आतंकवादियों द्वारा हिन्दू पर्यटकों की धार्मिक पहचान पूछकर की गई नृशंस हत्या के विरोध में मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन बैतूल एवं प्रोग्रेसिव पेंशन एसोसिएशन बैतूल के संयुक्त बैनर तले एक कैंडल मार्च का आयोजन किया गया। यह कैंडल मार्च अंबेडकर चौक से प्रारंभ होकर करगिल चौक तक निकाला गया। करगिल चौक पर एकत्र होकर पेंशनर्स ने आतंकी हमले में शहीद हुए पर्यटकों के लिए दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर पेंशनरों ने आतंकवादी घटना पर गहरा आक्रोश प्रकट किया और सरकार से मांग की कि वह इस नृशंस हमले के लिए जिम्मेदार आतंकियों और उनके सरपरस्तों को कड़ा सबक सिखाए। इस अवसर पर वरिष्ठ पेंशनर्स सुंदरलाल कड़वे, एमएम अंसारी, कैलाशचंद्र मालवीय, आरडी यादव, प्रकाश मांडवे, हरिओम रायपुरे, पीके जैन सहित लगभग 100 पेंशनर्स उपस्थित रहे।

नगर की दो विभूतियों जमील खान, शैलेन्द्र शर्मा को डॉक्टर की मानद उपाधि

सुबह सवेरे सोहागपुर । नगर की दो विभूतियों वरिष्ठ पार्षद एवं समाजसेवी जमील खान एवं पंडित शैलेन्द्र शर्मा को दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में ग्लोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ने सोशल वर्कर में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए डॉक्टर की मानद उपाधि से नवाजा गया है । कार्यक्रम कांता शर्मा के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ सौरभ पांडे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।उल्लेखनीय है कि सरल स्वभाव के धनी होने के कारण वरिष्ठ पार्षद जमील खान लगातार 6बार 30 सालों से भारी बहुमत से चुनाव जीत चुके हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि समाजसेवी जमील खान राम रहीम रोटी बैंक के संचालक हैं । राम रहीम रोटी बैंक रात्रि 8बजे सोहागपुर रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन जरूरतमंद, गरीब, बेसहारा लोगों को जनसहयोग स्वादिष्ट भोजन कराते हैं।राम रहीम रोटी बैंक संस्था के सभी सदस्य अपना अपना योगदान देते हैं। वहीं इस राम रहीम रोटी बैंक के माध्यम से क्षेत्र के नागरिक रेलवे स्टेशन परिसर में अपना जन्मदिन, परिवार के सदस्यों की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम करके बेसहारा नागरिकों की सहायता करते हैं। इधर पंडित शैलेन्द्र शर्मा कथा वाचक होने के साथ कवि के रूप में भी अपनी सहभागिता निभाते हैं।उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम श्रोताओं को बांधे रखने में माहिर हैं। दिल्ली में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में डॉक्टर की उपाधि

प्राप्त होने पर नगरवासियों शुभचिंतकों एवं स्नेही मित्रों ने आत्मीय बधाइयां दी हैं। इस संबंध में वरिष्ठ पार्षद जमील खान ने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों के सोशल वर्करों को निरोजा ग्रीन इंडिया परिवार फाउंडेशन द्वारा एक्सीलेंस लीडरशिप अवार्ड पर्यावरण संरक्षण विशेष कर वृक्ष रोपण अभियानों में निस्वार्थ सेवा देने वाले समर्पित कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया ।

संक्षिप्त समाचार

प्याऊ स्थापित कर जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रचार-प्रसार

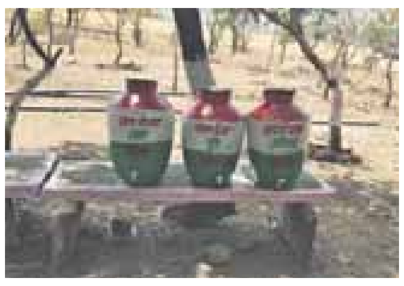

विदिशा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान का व्यापक प्रचार-प्रसार जल की महत्वता को रेखांकित कर विदिशा जिले में किया जा रहा है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में अभियान के प्रचार-प्रसार और जल स्त्रोतों को संवारने के उद्देश्य से विशेष पहल करते हुए लटेरी जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत सुनखेर में पीने के प्याऊ की व्यवस्था कर जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रचार किया जा रहा है। इस गांव में आम नागरिकों, राहगीरों व ग्रामीण जनों के पीने के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था प्याऊ स्थापित कर की गई है। इस प्याऊ में रखे गए मटकों पर जल गंगा संवर्धन और जल ही जीवन है के स्लोगन लिखकर जल संरक्षण करने का संदेश दिया गया है।

खेल शिविरो में शासकीय संस्थानो के बच्चे शामिल हो

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने ग्रीष्मकालीन खेल शिविरो के आयोजन का कैलेण्डर तैयार करने के निर्देश जिला खेल अधिकारी को दिए है। उन्होंने कहा कि खेल शिविरो में जिले की सभी शासकीय संस्थानो के बच्चों को उनकी खेल इच्छा अनुसार उन खेलो में शामिल होने की सुविधा विशेष तौर पर उपलब्ध कराई जाए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने खेल कैलेण्डर की जानकारियां स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग के साथ-साथ आदिम जाति कल्याण विभाग और आईटीआई संस्थानो को उपलब्ध कराई जाए। ताकि इन संस्थानो के बच्चे सुगमता से भाग ले सकें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने आदिम जाति कल्याण विभाग की जिला संयोजक श्रीमती पारूल जैन से कहा है कि छात्रावासी बच्चों के बौद्धिक विकास, शारीरिक विकास से संबंधित प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाए वहीं छात्रावासी बच्चों का वरिष्ठ कार्यालयो में भ्रमण कराकर शासकीय कार्यो के संपादन की प्रक्रियाओं से अवगत कराएं।

जल गंगा संवर्धन अभियान जलधरोवरो के लिए वरदान बना

विदिशा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान विदिशा जिले में जलसंचय स्त्रोतों के लिए वरदान साबित हो रहा है। अभियान के पहले अनेक स्त्रोत अपने पुरा वैभव की हाट लगाएं थे। अभियान की ललक ने उनके स्वरूप को ढ़क रही अनचाही वनस्पति और गर्द से मुक्ति मिल रही है। ग्यारसपुर में बाजारा मठ के समीप प्राचीन खड़ाऊ बावड़ी का कायाकल्प आज सीएमसी एलडीपी छात्रों एवं परामर्शदाताओं नवांकुर संस्थाओं ग्रामीण श्रमदानियों की अहूतियों संभव हुआ है। सब ने मिलकर बावड़ी में एक घंटा ऐसा श्रमदान किया कि सीढ़ियों की साफ सफाई देखने लायक हो गई। श्रमदानी यही नहीं रुके बल्कि आसपास की खरपतवार कचरा गंदगी को साफ कर साप्ताहिक श्रमदान का संकल्प लिया मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की प्रस्फुटन नेतृत्व में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत श्रमदान कार्यक्रमों की चैतरफा प्रशंसा हो रही है।

कामकाजी दीदियों, महिला श्रमिकों और उनके बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य शिविर

01 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर होगा महिला स्वास्थ्य केंद्रित शिविरों का आयोजन

भोपाल (निप्र)। प्रत्येक हितग्राही को उसकी आवश्यकता एवं सुविधा के अनुसार स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा निरंतर नवाचार कर हितग्राहियों तक पहुंचा जा रहा है। इसी कड़ी में घरों में काम करने वाली कामकाजी दीदियों एवं महिला श्रमिकों के लिए विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन 01 मई को किया जा रहा है। कामकाजी महिलाओं के समय और स्थान की सुविधा को देखते हुए दोपहर 1.00 बजे से तंग बस्ती क्षेत्रों में शिविर लगाए जाएंगे। शिविरों में महिलाओं के स्वास्थ्य परीक्षण के साथ-साथ उनके बच्चों की जांच एवं टीकाकरण भी किया जाएगा। समुदाय के बीच पहुंचकर स्वास्थ्य सेवाएं देने के उद्देश्य से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा पूर्व में श्रमिक पीठों, तंग बस्तियों, गल्ला मंडियों, रैन बसेरों, गार्बेज स्टेशंस, वृद्धाश्रमों इत्यादि में समय-समय पर विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। ये सभी शिविर हितग्राहियों के सुविधाजनक समय एवं स्थान पर आयोजित किए गए हैं।

शिविरों के माध्यम से नागरिकों को स्वास्थ्य के बारे में जागरूक भी किया गया, ताकि वे बीमारियों से बच सकें और लक्षणों की जल्द पहचान कर उपचार ले सकें। इन सामुदायिक स्वास्थ्य शिविरों में 50 हजार से ज्यादा नागरिकों को स्वास्थ्य की विभिन्न सेवाएं प्रदान की गई हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए किए जा रहे इन विशेष शिविरों में बीमारियों के चिन्ह्यांकन एवं उपचार के साथ साथ रेफरल एवं फॉलोअप भी सुनिश्चित किया जाएगा। महिला रोगों की जांच के साथ गर्भवती महिलाओं के लिए एन सी जांच, प्रथम तिमाही में पंजीयन, टीकाकरण, हाईरिस्क चिन्हांकन, पोषण परामर्श सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। कुपोषण की पहचान कर बच्चों के टीके भी इन शिविरों में लगाए जाएंगे। शिविरों में असंचारी रोगों का परीक्षण, आयुष्मान कार्ड, आभा कार्ड, मलेरिया, क्षय रोग व कुष्ठ रोग की स्क्रीनिंग कर इन बीमारियों की जानकारी के लिए जागरूकता गतिविधियां भी की जाएगी।

शिविरों के आयोजन के उद्देश्य के बारे में जानकारी देते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि कामकाजी दीदियां और महिला श्रमिक काम की व्यस्तता अथवा समय अभाव के कारण स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने में विलंब कर देते हैं या लाभ ले ही नहीं पाते हैं। इन महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिविर लगाए जा रहे हैं। शिविरों में नगर पालिका निगम एवं अन्य विभागों का सहयोग भी लिया जा रहा है। डॉ. तिवारी ने आमजन से अपील की है कि वे अपने घरों में काम करने वाली दीदियों एवं महिला श्रमिकों को इन शिविरों में लाभ लेने हेतु जानकारी देकर सेवाएं लेने हेतु प्रोत्साहित करें।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत नहर की सफाई की गई

विदिशा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जिले में प्रतिदिन जल स्त्रोतों को संवारने व उनके जीर्णोद्धार का कार्य सतत जारी है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित नहरों को साफ-स्वच्छ करने का कार्य भी संबंधित विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसी के तहत आज सम्राट अशोक सागर डैम आरबीसी की डी वन नहर को साफ-स्वच्छ करने के कार्यों का संपादन विभागीय अधिकारियों के नेतृत्व में किया गया है। विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों सहित ग्रामीण क्षेत्र के नागरिकों ने भी नहर को साफ-स्वच्छ करने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कराई है। सम्राट अशोक सागर डैम की डी वन नहर के आसपास फैली खरपतवार, अनावश्यक रूप से उगे हुए पेड़ पौधे, कचरा और गंदगी को फावड़े की मदद से तगाड़ियों में एकत्रित कर साफ किया गया है, ताकि नहर से गुजरने वाला पानी अन्य खेतों में भी पहुंच सके और नहर का पानी अन्य कृषकों के खेतों में पहुंचने में किसी भी प्रकार का कोई व्यावधान उत्पन्न ना हो।

जिला सहकारी विकास समिति की बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बी-पैक्स संस्थाओं के पुनर्गठन, नवीन दुग्ध संस्थाओं के गठन, मत्स्य सहकारी संस्थाओं के गठन, बी-पैक्स संस्थाओं के माध्यम से पशु आहार विक्रय, परिसमापन अधीन, अकार्यशील दुग्ध एवं मत्स्य संस्थाओं को पुनर्जीवित व कार्यशील करने से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई।

जिले में अब तक 520608 मेट्रिक टन गेंहू का उपार्जन हुआ

कलेक्टर द्वारा उपार्जन कार्यो का जायजा

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जिले में जारी उपार्जन कार्यो की अद्यतन स्थिति का जायजा लिया। कलेक्टर चेम्बर में आयोजित इस बैठक में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, जिला आपूर्ति अधिकारी श्री अनिल तंतुवाय के अलावा विभिन्न विभागो के अधिकारी मौजूद रहे। कलेक्टर श्री गुप्ता ने उपार्जन कार्यो को क्रियान्वित कराने वाले विभागो के अधिकारियों को सचेत करते हुए निर्देश दिए है कि बारिश के कारण एक भी उपार्जन केन्द्र का अनाज भीगना नहीं चाहिए, खासकर दलहनी फसले अंतर्गत चना पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए गए है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने सुरक्षित स्थलो पर परिवहन कराने के लिए वाहनो की संख्या बढाने के निर्देश दिए है इसके अलावा हरेक उपार्जन केन्द्र पर वैकल्पिक तौर पर की जाने वाली व्यवस्थाओं के तहत तिरपाल की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाए। गेंहू उपार्जन के लिए नियुक्त नोडल व जिला आपूर्ति अधिकारी श्री अनिल कुमार तंतुवाय ने बताया कि समर्थन मूल्य पर गेंहू विक्रय हेतु ई पोर्टल पर 60479 कृषको के द्वारा स्लॉट बुक किए गए है आज दिनांक तक 50377 कृषको से 520608 मेट्रिक टन गेंहू का उपार्जन किया गया है। उपार्जित किए गेंहू में से 46107 कृषको को भुगतान हेतु 1231.35 करोड रूपए के ईपीओ जारी किए जा चुके है जिसमें से 39540 किसानो को 1039.67 करोड का सफल भुगतान किया जा चुका है।

स्लॉट बुक करने की अंतिम तिथि

जिला आपूर्ति अधिकारी श्री तंतुवाय ने बताया कि समर्थन मूल्य पर गेंहू विक्रय करने के लिए किसान भाईयों को स्लॉट बुक करना अनिवार्य है। इसके लिए अंतिम तिथि 30 अप्रैल नियत की गई है अर्थात बुधवार 30 अप्रैल तक समर्थन मूल्य पर गेंहू विक्रय के लिए जिन किसानो के द्वारा पंजीयन कराया गया है और अब तक स्लॉट बुक नहीं किया गया है अतः जिले के ऐसे सभी किसान भाईयों से पुनः अपील की गई है कि 30 अप्रैल तक स्लॉट बुक करने की सुविधा उपलब्ध रहेगी। गौरतलब हो कि समर्थन मूल्य पर गेंहू उपार्जन का कार्य जिले के 190 केन्द्रो पर 15 मार्च से शुरू हुआ है जो पांच मई तक जारी रहेगा। उपरोक्त बैठक में कॉ-आपरेटिव बैंक के सीईओ श्री विनय प्रकाश सिंह, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के उप संचालक श्री केएस खपडिया, जिला विपणन अधिकारी, नागरिक आपूर्ति निगम के प्रबंधक, सहकारिता विभाग, नापतौल विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत तिनघरां में ग्रामीणों को जल संरक्षण के लिए किया प्रेरित, नदी पर बोरी बंधान कार्य भी किया गया

रायसेन (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले के ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जल संरचनाओं की साफ-सफाई की जा रही है, जिससे कि बारिश का अधिक से अधिक संग्रहित हो सके। साथ ही नागरिकों को भी जल का महत्व बताते हुए जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी क्रम में विकासखण्ड सिलवानी की नवांकुर योजना अंतर्गत चयनित सत्यार्थ वेलफेयर फॉउन्डेशन सिलवानी द्वारा ग्राम तिनघरां में चौपाल लगाकर जल स्त्रोतों का महत्व बताते हुए जल स्त्रोतो के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए ग्रामवासियों को जानकारी दी गई। बारिश के जल को संरक्षित करने को लेकर बोरी बंधान, मेढ़ बंधान, कुंआ, बावड़ी तालाब की सफाई को लेकर ग्रामवासियो से चर्चा की गई। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत ग्रामवासियों को जल संरक्षण एवं संवर्धन की शपथ दिलाई गई। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम की नदी पर सामूहिक श्रमदान कर बोरी बंधान बनाया गया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, नवांकुर संस्था और प्रस्फुटन समिति के अध्यक्ष, सदस्य और ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

जिले में बाल विवाह की रोकथाम हेतु कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने गठित किए कोर ग्रुप

रायसेन (निप्र)।राज्य शासन द्वारा आगामी ÷अक्षय तृतीया÷ एवं विवाह मुहूर्तो को दृष्टिगत रखते हुये बाल विवाहों की रोकथाम की प्रभावी कार्यवाही सुनिष्चित करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। जिले में बाल विवाह की रोकथाम हेतु कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा विकासखण्डों में एसडीएम की अध्यक्षता में विकासखण्ड स्तरीय कोर ग्रुप/उड़न दस्तें गठित किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 अंतर्गत 21 वर्ष से कम आयु के बालक तथा 18 वर्ष से कम आयु की बालिका का विवाह बाल विवाह की श्रैणी में आता है एवं कानूनन प्रतिषिद्व किया गया है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास श्री दीपक संकत ने बताया कि बाल विवाह की रोकथाम हेतु विकासखण्डों में एसडीएम की अध्यक्षता में विकासखण्ड स्तरीय कोर ग्रुप/उड़न दस्तें गठित किए गए हैं। कोर ग्रुप में विकासखण्ड स्तर के अधिकारियों अनुविभागीय अधिकारी पुलिस, तहसीलदार, परियोजना अधिकारी बाल विकास परियोजनाएं महिला बाल विकास विभाग, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत, विकासखण्ड षिक्षा अधिकारी, चिकित्सा अधिकारी आदि को सम्मिलित किया गया है। जिले के सभी बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत एवं परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को क्षेत्र में सतत निगरानी करने एवं बाल विवाहों की सूचना प्राप्त होने पर अधिनियम अनुसार प्रभावी कार्यवाही सुनिष्चित करने हेतु निर्देशित किया गया है। जिला मुख्यालय पर बाल विवाह की सूचनाओं के आदान प्रदान हेतु कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग दषहरा मैदान रायसेन में कन्ट्रोल रूम स्थापित किया गया है। जिसमें 30 अप्रैल को प्रातः 08 बजे से दोपहर 03 बजे तक श्री दिनेश मालवीय मो.न. 8770217901 तथा सुश्री शिवानी राजपूत मो.न. 6267029360, दोपहर 03 बजे से रात्रि 10 बजे तक श्री संजोग पटेल मो.न. 7354107056 तथा श्री अनुज अगिनहोत्री मो.न. 6264135896 और रात्रि 10 बजे से 01 मई 2025 को प्रातः 08 बजे तक श्री मोहन यादव मो.न. 9826853743, श्री विवेक विश्वकर्मा मो.न. 7000750602 तथा श्री अशोक सेन की ड्यूटी लगाई गई है। कंट्रोल रूम में ड्यूटीरत कर्मचारी कार्यालय अथवा मोबाईल पर बाल विवाह की सूचना प्राप्त होने पर बाल विवाह रूकवाने हेतु तत्काल संबंधितों को सूचना प्रदाय करना सुनिश्चित करेंगे। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास रायसेन श्री दीपक संकत द्वारा जनसामान्य से अपील की गई है कि स्वयं अपने बच्चों का बाल विवाह न करें, किसी बाल विवाह के आयोजन में शामिल ना हों एवं अपने आस-पास कहीं भी बाल विवाह आयोजन की सूचना मिलने पर तत्काल संबंधित क्षेत्र के एसडीएम, जनपद सीईओ, पुलिस थाना, परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास, चाइल्ड लाइन 1098, डायल 100, महिला हेल्पलाइन-181 पर सूचना दी जा सकती है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले में संचालित की जा रही अनेक गतिविधियां

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार सीहोर जिले मे 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले भर में जल संरक्षण से संबंधित अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। अभियान के तहत आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए दीवार लेखन, जागरूकता रैली, पोस्टर बैनर, रंगोली, ग्राम सभाएं, कलश यात्राएं, शपथ सहित अनेकों गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। अभियान के तहत जिले के अनेक ग्रामों में कूप मरम्मत, तालाब जीर्णोद्धार, डैम की साफ-सफाई सहित अनेक कार्य किए जा रहे हैं तथा नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलाई जा रही है। उल्लेखनीय है कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं।

कलेक्टर ने वन व्यवस्थापन और वन ग्रामों के संपरिवर्तन की कार्यवाही में गति लाने के दिए निर्देश

वन व्यवस्थापन एवं वन ग्रामों के संपरिवर्तन के संबंध में बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में वन व्यवस्थापन एवं वन ग्रामों के संपरितर्वन के संबंध में जिला पंचायत सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने वन व्यवस्थापन एवं संपरिवर्तन की अब तक की कार्यवाही की समीक्षा करते हुए वन मंडल अधिकारी, सभी एसडीएम एवं राजस्व अधिकारियों को कार्यवाही को गति देने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री बालागुरू के ने कहा कि शासन के नियमों के अनुरूप सभी कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि राजस्व एवं वन विभाग के अधिकारी समय समय पर बैठक और समन्वय कर वन व्यवस्थापन और संपरिवर्तन गतिरोध को दूर करें। उन्होंने कहा कि धारा 5 से धारा 19 तक की समस्त कार्यवाही पूर्ण करने के उपरान्त धारा 20 के तहत प्रारूप अधिसूचना एवं वन व्यवस्थापन का अंतिम प्रतिवेदन तैयार कर भेजा जाना है। यह कार्यवाही जल्द पूरी की जाए। उन्होंने कहा कि धारा 20 की प्रारूप अधिसूचना मे नये एवं पुराने खसरा नंबर तथा उनको राजस्व अभिलेखो मे नोईयत या मद जैसे छोटा झाड़, बडा झाड़ का जंगल, पहाड, चट्टान, घास इत्यादि दर्ज की जायेगी। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने वन व्यवस्थापन अधिकारी एवं अनुविभागीय अधिकारी वन को शासन के सभी प्रावधानों का गहन अध्ययन कर संयुक्त रूप से वन व्यवस्थापन संबंधी कार्यवाही करने के निर्देश दिए। वन ग्राम से राजस्व ग्रामों मे संपरिवर्तन के लिए मध्यप्रदेश शासन के जनजातीय कार्य विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार आम सूचना जारी की जायेगी। उप खण्ड स्तरीय समिति लैंड यूस मैप तैयार करायेगी। जिसमें कृषि भूमि का रकबा, बसाहट की भूमि, श्मशान स्थल, वन, जल संरचनाएं, चरनोई चारागाह की भूमि, सामुदायिक परिसंपत्ति जैसे स्कूल, धार्मिक स्थल, खेल मैदान, स्वास्थ्य एवं अन्य सामुदायिक उपयोग के भवन, सामुदायिक संसाधन आदि होंगे। बैठक में डीएफओ मगन सिंह डाबर ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह सहित राजस्व एवं वन विभाग के संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

जिला स्तरीय टॉस्क फोर्स समिति की बैठक सम्पन्न

वन क्षेत्रो में अवैध कटाई व उत्खनन कार्यो को रोकने के लिए रणनीति

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता की अध्यक्षता में वन विभाग की जिला स्तरीय टॉस्क फोर्स समिति की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी, वन मण्डलाधिकारी श्री हेमंत यादव के अलावा अन्य विभागो के अधिकारी मौजूद रहे। कलेक्ट्रेट के बेतवा सभागार में आयोजित इस बैठक में कलेक्टर श्री गुप्ता को वन मण्डलाधिकारी द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियां सांझा की जिसमें समस्याओं के अंतर्गत असंगठित अवैध कटाई एवं परिवहन, संगठित अवैध उत्खनन और वन क्षेत्रो के अतिक्रमण की जानकारियां गूगल शीट के माध्यम से प्रस्तुत की। बैठक में टॉस्क फोर्स हेतु शासन स्तर से प्राप्त दिशा निर्देशो से अवगत कराया गया वहीं जिले में अवैध कटाई के लिए संवदेनशील परिक्षेत्र लटेरी, उत्तर, दक्षिण , शमशाबाद एवं ग्यारसपुर क्षेत्रो में अवैध कटाई रोकने के लिए निगरानी के लिए किए जा रहे प्रबंधो पर तकनीकी सहायता के संबंध में जानकारी दी गई। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि वन क्षेत्रो के आदिवासियों को शासन की मंशा के अनुरूप योजनाओं का लाभ मिले इसके लिए जनजागरूकता कार्यो पर अधिक से अधिक बल देने तथा बीट गार्डो की बैठक आयोजित कर शासन की मंशा से अवगत कराते हुए क्रियान्वित किया जाए। उन्होंने वन क्षेत्रो की चुनौतियां, संगठित अपराध, अंतर जिला एवं अंतर्राजीय चुनौतियों के समाधान हेतु अन्य जिलो से परस्पर समन्वय स्थापित कर छापामार कार्यवाही की जाए। वन क्षेत्र के रहवासियों को रोजगार के संसाधनो की पूर्ति सुनिश्चित कराने के लिए जिले में पृथक से नवाचार की पहल की जाए जो स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति को ही ध्यानगत रखते हुए स्वरोजगारमुखी योजनाओं से लाभांवित कराने के प्रयास किए जाएं। चोरी के वाहनो व मोटर साइकिलो के उपयोग को रोकने के लिए जिला परिवहन अधिकारी की मदद से जांच पड़ताल कर बिना कागज पत्रक के वाहनो को राजसात करने की कार्यवाही की जाए।

मंदिरम् 97

सोमेश्वर मंदिर, कर्नाटक

सोमेश्वर मंदिर भारत के कर्नाटक के कोलार जिले में 11वीं शताब्दी के दौरान महान चोलों द्वारा निर्मित भगवान शिव को समर्पित एक प्रसिद्ध हिंदू मंदिर है। मंदिर के मुख्य देवता सोमेश्वर हैं, जिन्हें भगवान शिव के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण इस मंदिर को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में संरक्षित करता है। मंदिर वास्तुकला में समृद्ध है, जिसमें ईंट और प्लास्टर से बनी एक शानदार संरचना है। यह मंदिर अप्सराओं और देवताओं के सुंदर सजावटी नक्काशीदार स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है। नवग्रह के लिए एक अलग मंदिर है, और मंदिर के चारों ओर एक अच्छी तरह से निर्मित परिसर की दीवार है। एक विवाह हॉल भी देखा जा सकता है।

भगवान परशुराम की जन्मस्थली जानापाव में बनेगा परशुराम धाम : सीएम डॉ. यादव

भगवान परशुराम जयंती पर महू में हुआ परशुराम प्रकटोत्सव, सीएम हुए शामिल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि इंदौर जिले में महू के निकट जानापाव सनातन संस्कृति के सात चिरंजीवियों में से एक भगवान श्री परशुराम की जन्मस्थली है। भारत भूमि पर यह एक अद्वितीय स्थल है। जब-जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ा, भगवान परशुराम ने शस्त्र उठाए और अधर्मियों का समूल नाश कर दिया और सनातन संस्कृति की रक्षा की। उन्होंने सनातन समाज को निर्भय होकर जीने का संदेश दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भगवान परशुराम जयंती पर महू में परशुराम प्रकटोत्सव को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भगवान श्री परशुराम की जन्मस्थली पर पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि के लिए कामना की। उन्होंने कहा कि जानापाव में परशुराम धाम विकसित किया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री महिला बाल विकास मंत्रालय श्रीमती सावित्री ठाकुर, राज्यसभा सदस्य श्रीमती कविता पाटीदार, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक सुश्री उषा ठाकुर, विधायक श्री गोलू शुक्ला सहित साधु-संत तथा बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीराम से लेकर श्रीकृष्ण के काल तक भगवान परशुराम के पराक्रम और उनके शस्त्रों की महत्ता दिखाई देती है। भगवान श्रीराम जब स्वयंवर में पहुंचे तो वहां उन्होंने भगवान परशुराम का धनुष तोड़ा। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के काल में भगवान परशुराम के सुदर्शन चक्र की लीला देखने को मिली। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना प्रिय सुदर्शन चक्र भगवान श्रीकृष्ण को दिया था। भगवान परशुराम कौरव-पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य के भी गुरु थे। उन्होंने निडर होकर धर्म की रक्षा का संदेश दिया ।

धर्म और संस्कृति को पल्लवित कर रही प्रदेश सरकार

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत भूमि पर देवी-देवताओं की कृपा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। केंद्र सरकार देश की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठा रही है। हमारी संस्कृति 'जियो और जीने दो' पर आधारित है। प्रदेश में सनातन संस्कृति के विकास के लिए राज्य सरकार ने गीता भवनों के निर्माण का संकल्प लिया है। राज्य सरकार धर्म और संस्कृति को पुष्पित-पल्लवित करते हुए आगे बढ़ रही है। गरीब, अन्नदाता (किसान), युवा और नारी कल्याण के लिए 4 मिशन शुरू किए गए हैं। किसानों की समृद्धि के लिए प्रदेश में एक-एक खेत तक सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है। मध्यप्रदेश में 2 वृहद नदी जोड़ो परियोजनाओं केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल की शुरुआत हो चुकी है। अब बुंदेलखंड, चंबल, निमाड़ और मालवा के कई जिलों के किसानों को पर्याप्त पानी मिलेगा।

एमपी में अक्षय तृतीया की धूम, खूब हुई शादी

● भोपाल में सामूहिक विवाह, ग्वालियर में छाता लगाकर निकले दूल्हे ● धार में 2100 जोड़ों ने लिए सात फेरे, शाजापुर में 1247 शादियां

भोपाल। मध्यप्रदेश में अक्षय तृतीया पर शाजापुर में कालापीपल में 1247 जोड़ों ने सामूहिक विवाह सम्मेलन में शादी की। सीएम डॉ. मोहन यादव और पंडित प्रदीप मिश्रा नवदंपतियों को आशीर्वाद देने यहां पहुंचे। छिंदवाड़ा में 928 जोड़ों ने सात फेरे लिए। ग्वालियर में भीषण गर्मी के बीच दूल्हे छाता लगाकर पहुंचे। यहां 40 डिग्री तापमान रहा। ग्वालियर में चार समारोह में 172 शादियां हुई। वहीं धार में जिला स्तरीय कार्यक्रम में 2100 जोड़े शादी के बंधन में बंधे। दिव्यांग जोड़े भी व्हीलचेयर पर बैठकर शामिल हुए। भोपाल में 151 जोड़े विवाह सूत्र में बंधे। उपहार में उन्हें श्रीमद्भागवत दी गई। इससे पहले सीएम डॉ. मोहन यादव उज्जैन के दाऊदखेड़ी में आयोजित समारोह में पहुंचे थे। यहां उन्होंने 70 नवदंपत्तियों को आशीर्वाद देकर उपहार भी बांटे। रतलाम में भी अलग-अलग जगह सामूहिक विवाह सम्मेलन हुए। बैंड-बाजों को साथ बारात निकाली गई। इसके बाद शादी की रस्में निभाई गई। वहीं अक्षय तृतीया पर भोपाल में सामूहिक विवाह सम्मेलन हो रहे हैं। फंदा में 151 जोड़े विवाह सूत्र में बंधें। विधायक रामेश्वर शर्मा भी मौजूद रहे। इस दौरान सभी जोड़ों को उपहार में श्रीरामचरित मानस दी गई। जनपद अध्यक्ष प्रमोद राजपूत ने बताया कि मुख्यमंत्री कन्या दान योजना के तहत आयोजन हुआ। कुल 151 जोड़े शामिल रहें। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ दूल्हा-दुल्हन विवाह सूत्र में बंधे। इधर, अक्षय तृतीया पर कोई बाल विवाह न हो, इसलिए जिला प्रशासन की टीमें नजर रख रही है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने टीमें बनाई हैं। विट्ठन मार्केट में अभा पाल महासभा का निःशुल्क मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत सामूहिक विवाह सम्मेलन शाम को होगा। शाम को बारात का आगमन होगा और जोड़े सात फेरे लेंगे।

बैरसिया में शादी के तीसरे दिन विवाहिता से रेप

- **खुद के जेठ ने ही दिया इस बड़ी वारदात को अंजाम**
- **पति कहता था भाई की करतूत किसी को मत बताना**

भोपाल। बैरसिया में रहने वाले एक युवती ने प्रेम विवाह किया। शादी के तीसरे दिन शराब के नशे में उसके जेठ ने रेप किया। जेठ की करतूत जब पति को बताई गई तो उसने चुप रहने के लिए कहा। बाद में आरोपी जेठ की हरकतें लगातार बढ़ती चली गई, तब महिला ने थाने में पहुंचकर केस दर्ज कराया। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है। थाना प्रभारी अरुण शर्मा ने बताया कि 20 वर्षीय युवती ने जनवरी में बैरसिया की एक कॉलोनी में रहने वाले युवक से प्रेम विवाह किया था। शादी के बाद वह अपनी ससुराल पहुंच गई। तीन दिन बाद ही जब महिला का पति घर पर नहीं था तो उसके जेठ ने शराब के नशे में उसके साथ रेप किया। पति जब वापस लौटा तो महिला ने उसे पूरी बात बताई। पति उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ तो महिला ने यह बात अपनी सास को भी बताई। दोनों ने ही उसकी बात को

नहीं माना तथा धमकी दी कि अगर किसी को कुछ भी बताया तो घर से निकाल देंगे।

दोबारा रेप की कोशिश करने पर थाने पहुंची पीड़िता- ससुराल वालों की धमकी मिलने से महिला चुप हो गई। इसी बीच उसकी चुप्पी का फायदा उठाकर जेठ फिर से उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने की कोशिश करने लगा। परेशान होकर महिला ससुराल से भागी तथा पुलिस को शिकायत कर दी। पुलिस ने इस मामले में जेठ के खिलाफ रेप का प्रकरण दर्ज किया है तथा पति, सास समेत तीन को सह आरोपी बनाया है। आरोपियों की अभी गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। इधर सूखी सेवनिया पुलिस ने बताया कि 27 वर्षीय महिला भोपाल के एक कॉलोनी में रहती थी। दो महीने पहले उसके पति की मौत हो गई थी। महिला पूर्व से अरविंद जैन नाम के युवक को जानती थी। पति की मौत के बाद युवक ने नजदीकियां बढ़ाई तथा शादी करने का झांसा दिया। महिला उसके झांसे में आ गई तो गत 19 अप्रैल को वह महिला को अपने घर ले गया। यहां पर उसने मांग भरकर महिला से शादी कर ली। इसके बाद उसने महिला का शारीरिक शोषण करना शुरू कर दिया। करीब दस दिन तक शारीरिक शोषण करने के बाद युवक ने महिला को अपने घर से भगा दिया। महिला ने मंगलवार की रात पुलिस को मामले की शिकायत कर दी। उसकी शिकायत पर कार्रवाई करते हुए सूखी सेवनिया पुलिस ने दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्राथमिक तौर पर पता चला है कि आरोपी के पास एक वाहन है जिसे वह खुद ही चलाता है।

कॉलेज में चेहरा दिखाकर गायब नहीं हो सकेंगे प्रोफेसर

कम से कम छह घंटे रुकना अनिवार्य, नॉन टीचिंग स्टाफ की अटेंडेंस पर भी विभाग सख्त

भोपाल। कॉलेज में कुछ घंटों के लिए चेहरा दिखाकर चले जाने वाले प्रोफेसर्स और अन्य प्राध्यापकों व स्टाफ पर सरकार सख्ती करने जा रही है। उच्च शिक्षा विभाग ने तय किया है कि अब कॉलेज में कम से कम छह घंटे रुकने पर ही पूरे दिन का वेतन जनरेट किया जाएगा। सरकारी महाविद्यालयों में पदस्थ प्रोफेसर अगर छह घंटे से कम अवधि तक कॉलेज में रुकते हैं तो उनके वेतन में कटौती की जाएगी। प्रोफेसर और अन्य स्टाफ का वेतन कटने की स्थिति में उन्हें अवकाश दिया जा सकेगा जिसे लीव मैनेजमेंट सिस्टम में अपडेट किया जाएगा। उच्च शिक्षा विभाग ने प्रोफेसर्स के साथ एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर के साथ लाइब्रेरियन, क्रीड़ा अधिकारी, अतिथि शिक्षक और जनभागीदारी समिति व गैर शैक्षणिक स्टफ के लिए दैनिक और मासिक उपस्थिति के आधार पर वेतन जारी करने के निर्देश जारी किए हैं। विभाग ने बुधवार को सभी शासकीय महाविद्यालय और अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों के प्राचार्यों, डीडीओ को जारी निर्देश में कहा

है कि मार्च माह में हुई बैठक में मंत्री इंदर सिंह परमार ने इस मामले में सख्त निर्देश दिए थे। इसके पहले विभाग द्वारा फरवरी में दो अलग-अलग पत्र लिखकर वेतन का भुगतान सार्थक एप पर उपस्थिति के आधार पर जारी करने के निर्देश दिए गए थे। आज जारी निर्देश में कहा गया है कि मार्च माह के वेतन का भुगतान भी सार्थक एप में दर्ज उपस्थिति के आधार पर किया जाना था। सार्थक एनालिटिकल डैश बोर्ड के द्वारा सभी शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक वर्ग के लिए इसे लागू किया गया है। इनकी दैनिक और मासिक उपस्थिति की रिपोर्ट एप के डेटा के आधार पर प्राचार्यों को उपलब्ध कराई जा रही है। उच्च शिक्षा विभाग के संचालक वित्त द्वारा जारी निर्देश में कहा गया है कि प्राचार्य डीडीओ हर शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक संवर्ग का वेतन हर माह की 30 तारीख को बनाएंगे। इसमें सार्थक एप पर दर्ज की गई उपस्थिति तथा हर वर्किंग डे में कम से कम छह घंटे की उपस्थिति को देखा जाएगा। सभी संवर्ग के स्टाफ की अनुपस्थिति को प्राचार्य उनके अवकाश के साथ समायोजित कर सकते हैं, जिसे ईएचआरएमएस के लीव मैनेजमेंट सिस्टम में दर्शाया जाएगा।

इसके लिए लीव मैनेजमेंट सिस्टम का माड्यूल विकसित किया जा रहा है। इस मामले में निर्देशों के उल्लंघन में किसी भी तरह की लापरवाही के लिए प्राचार्य और डीडीओ ही जिम्मेदार माने जाएंगे।

गोविंदपुरा में 17 हजार वर्गफीट जमीन पर लगेगी नई यूनिट

450 लोगों को रोजगार देगी भोपाल में शुरू होने वाली इलेक्ट्रिक बस यूनिट

भोपाल। भोपाल में जल्द ही इलेक्ट्रिक बस बनाने की यूनिट शुरू होने जा रही है। इससे 450 लोगों को रोजगार मिलेगा। इनमें 250 प्रत्यक्ष और 200 अप्रत्यक्ष रोजगार होंगे। यह यूनिट गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया की 17 हजार वर्गफीट जमीन पर शुरू होगी। इसके बाद अचारपुरा, भौंरी या अन्य स्थान पर राज्य सरकार से मिलने वाली जमीन पर इसका विस्तार किया जाएगा। फरवरी में हुई ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में ईवी इंडस्ट्री को लेकर खासा उत्साह दिखा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने संबोधन में मध्यप्रदेश को इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए उभरता बाजार बताया। इसी से प्रेरित होकर फ्यूचर ऑटोटेक के एमडी दीपक वर्मा ने अगले दो-तीन महीने में ई-बस प्लांट शुरू करने की घोषणा की। उनका कहना है कि राज्य सरकार की ईवी पॉलिसी से उन्हें काफी उम्मीदें हैं। जल्द ही बड़ी प्रोडक्शन यूनिट के लिए जमीन मिलने की संभावना है। मध्यप्रदेश में ई-व्हीकल को लेकर बीते चार सालों में तेजी से काम हुआ है। इंदौर पहला शहर बना, जहां शहरी यातायात के लिए छोटी दूरी की इलेक्ट्रिक बसें शुरू हुईं। इसके बाद भोपाल देश का पहला शहर बना, जहां इंटरसिटी इलेक्ट्रिक बस सेवा भोपाल से इंदौर के बीच शुरू हुई। यह सेवा ग्रीन सेल मोबिलिटी द्वारा चलाई जा रही है, जिसकी फ्रेंचाइजी वर्मा ट्रैवल्स के पास है। फिलहाल प्रदेश में 100 से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें चल रही हैं। इनमें न्यूगो की 31 बसें भोपाल-इंदौर और भोपाल-उज्जैन के बीच संचालित हो रही हैं। हालांकि, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर अभी जरूरत के मुताबिक विकसित नहीं हो पाया है। प्रदेश सरकार इस दिशा में काम कर रही है। चार्जिंग स्टेशन के लिए जमीन और बिजली की आपूर्ति पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

ई-बसों की संचालान लागत डीजल बसों की तुलना में कम- ई-बसों में पूंजीगत निवेश ज्यादा है, लेकिन संचालन लागत डीजल बसों की तुलना में काफी कम है। आम लोगों को इसका लाभ कैसे मिले, यह सरकार के सामने बड़ी चुनौती है। चार्जिंग स्टेशन की लागत में जमीन का खर्च ज्यादा आता है। सस्ती दरों पर चार्जिंग तभी संभव है, जब बिजली रियायती दरों पर लंबे समय तक उपलब्ध हो। फिलहाल प्रदेश में 24 फीसदी बिजली सोलर से बन रही है। यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है।

दाढ़ी-टोपी से निपटने के लिए हुआ है मेरा जन्म

● हिंदू लड़कियों से रेप मामले में बोले भोपाल सांसद शर्मा ● विधायक मसूद बोले-बेटियों को धर्म के चश्मे से न देखें

भोपाल। भोपाल मध्य विधानसभा से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने पहचान बदलकर हिंदू युवतियों से रेप की घटना पर कहा कि किसी भी समाज या वर्ग की बेटियां हों, वे हमारी भी बेटियां हैं। उन्हें जाति या धर्म के आधार पर नहीं आंकना चाहिए। बेटी किसी की भी हो, हमें उसे अपनी बेटी मानना चाहिए। मसूद ने आगे कहा कि जो लोग इस तरह के अपराध करते हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। मैं पहले भी इसके पक्ष में था और आज भी हूं। इस पर भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने कहा कि धर्मांतरण आज एक गंभीर चिंता का विषय है। हमें ऐसे लोगों को सीधे सजा देने का संकल्प लेना होगा। मेरा जन्म दाढ़ी-टोपी से निपटने के लिए हुआ है। आरिफ मसूद ने कहा, किसी धर्म विशेष पर ये लोग क्यों सोचते हैं? एक धर्म की बच्ची हो या किसी जाति की, बच्ची तो बच्ची है। जो अपराध कर रहा है, उसको सजा होना चाहिए। सबको उसके साथ खड़े होना चाहिए। ये चश्मा कब हटेगा। अक्षय तृतीया के पर भोपाल के गुफा मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में बीजेपी सांसद आलोक शर्मा ने 'लव जिहाद' को लेकर कहा- जो लोग लव जिहाद करना चाहते हैं, वे आकर देख लें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, ऐसे लोग जीवन भर किसी हिंदू लड़की का धर्मांतरण करना भूल जाएंगे। धर्मांतरण आज एक गंभीर चिंता का विषय है। हमें ऐसे लोगों को सीधे सजा देने का संकल्प लेना होगा। पुराने भोपाल में हिंदुओं का पलायन चिंता का विषय बन गया है। वहां हिंदू लोग मकान और दुकानें बेचकर जा रहे हैं। मुस्लिम आबादी बढ़ रही है, हिंदू आबादी घट रही है। केवल आलोचना करने से कुछ नहीं होगा, अब एकजुट होकर काम करना होगा। उन्होंने कहा- 5 जून भोपाल के लिए ऐतिहासिक दिन होगा, जब बागेश्वर धाम के पं. धीरेंद्र शास्त्री इकबाल मैदान से हिंदुओं के पलायन को रोकने की आवाज उठाएंगे।